विनोद पुस्तक मंदिर का ग्यारहवाँ पुष्प

भाग्य-चक्र

उर्फ

नीलिमा

(उच्चकोटि का मौलिक सामाजिक उपन्यास)

लेखक

'विनोद'

[अनेकानेक पुस्तकों के रचयिता]

प्रकाशक

विनोद पुस्तक मन्दिर,

हास्पिटल रोड, आगरा।

हैं और मेहनत करने पर भी दो दो दिन निराहार रहना पड़ता है। उन्हें तो यह सब सहने की आदत पड़ गई है।

सुरेश—मालूम पड़ता है आप बहुत दुखी हैं। आप के और कौन-कौन हैं?

बुढ़िया—मेरे सब कोई थे, पर भैया, मेरी तकदीर से कोई न रहा। जब से नीलिमा के पिता मरे हैं, मुझ पर दुख के पहाड़ टूट पड़े। नीलिमा के पिता गये उसके दूसरे वर्ष जवान बेटा चला गया। रहा सहा धन था वह भी बीमारी मे उठ गया। अब हम दोनों माँ बेटी के खाने तक की मुसीबत है। यह कह बुढ़िया आँचल से आँसू पोछने लगी।

सुरेश—माता जी, दुखी न होइये यह सब तकदीर की लिखी बातें हैं। मनुष्य सब अपने कर्मों का भोग भोगता है। क्या आपकी लड़की की शादी हो गई?

बुढ़िया—नहीं भैया, अभी कहाँ। जब खाने तक को नहीं जुड़ता तो शादी कहाँ से करूँ। मेरी नीलिमा बटी इतनी सुन्दर और बुद्धिमती है। जैसा रूपगुण वैसा ही उसके पिता ने नाम रखा था। पर भैया, किसी ऐसे वैसे के हाथों उसे दे भी तो नहीं सकती।

सुरेश—तो कुटुम्ब का पालन कैसे होता है?

बुढ़िया—कुटुम्ब के पालन हारे भगवान हैं। एक जमीन का टुकड़ा है। उससे पचीस रुपये साल मिल जाते हैं। वही एक सहारा है। कष्ट से किसी दिन एक बार खा कर, किसी दिन

हैं और मेहनत करने पर भी दो दो दिन निराहार रहना पड़ता है। उन्हे तो यह सब सहने की आदत पड़ गई है।

सुरेश—मालूम पड़ता है आप बहुत दुखी हैं। आप के और कौन-कौन हैं ?

बुढ़िया—मेरे सब कोई थे, पर भैया, मेरी तकदीर से कोई न रहा। जब से नीलिमा के पिता मरे हैं, मुझ पर दुख के पहाड़ टूट पड़े। नीलिमा के पिता गये उसके दूसरे वर्ष जवान बेटा चला गया। रहा-सहा धन था वह भी बीमारी में उठ गया। अब हम दोनों माँ बेटी के खाने तक की मुसीबत है। यह कह बुढ़िया आँचल से आँसू पोंछने लगी।

सुरेश—माता जी, दुखी न होइये यह सब तकदीर की लिखी बातें हैं। मनुष्य सब अपने कर्मों का भोग भोगता है। क्या आपकी लड़की की शादी हो गई ?

बुढ़िया—नहीं भैया, अभी कहाँ। जब खाने तक को नहीं जुड़ता तो शादी कहाँ से करूँ। मेरी नीलिमा बेटी इतनी सुन्दर और बुद्धिमती है। जैसा रूपगुण वैसा ही उसके पिता ने नाम रखा था। पर भैया, किसी ऐसे वैसे के हाथों उसे दे भी तो नहीं सकती।

सुरेश—तो कुटुम्ब का पालन कैसे होता है ?

बुढ़िया—कुटुम्ब के पालन हारे भगवान हैं। एक जमीन का टुकड़ा है। उससे पचीस रुपये साल मिल जाते हैं। वही एक सहारा है। कष्ट से किसी दिन एक बार खा कर, किसी दिन

की ओर रवाना हुए।

सुरेश के चले जाने पर नीलिमा बाहर आई और माँ से पूछा—'माँ, यह कौन थे?'

माँ ने कहा—नहीं पहिचानती? अपने जमींदार के पुत्र सुरेश बाबू थे। सुरेश बाबू बडा नेक और सुशील लडका है। भगवान उसकी उम्र बढावे। नीलिमा ने कोई उत्तर नही दिया। तब माँ ने कहा, बेटी नीलम, सध्या हो गई है, जाओ दिया जलाओ। फिर मेह न बरसने लगे इस लिए दिन रहते ही रसोई बना लो।

नीलिमा—क्या बनाऊँ?

माँ—क्यो, चावल के किनके तो हैं।

नीलिमा—(बडे दुख से) माँ, वह तो कल ही निबट गये थे।

माँ—तो कुछ भी नही है?

नीलिमा न नीचे सिर किये हुए उत्तर दिया—नहीं माँ।

माँ—तो क्या आज फिर उपवास करना पडेगा?

नीलिमा—माँ, इसमे दुखी होने की क्या बात है? एक दिन मे भूखा रहने से क्या बिगड जायगा।

माँ बहुत दुखी हुई। दरिद्र तो इस जगत मे मनुष्यों पर जैसा प्रहार करता है, वज्र भी कदाचित् वैसा न कर सकेगा।

दोनो माँ बेटी भूखी ही सो गई। माँ की सुखद गोद में नीलिमा बेसुध हो सो गई। पर माँ को रात भर नींद नहीं आई। वह रह-रह कर अपने बीते समय की बातें याद करती,

भूखे ही सो जाना पडता है।

सुरेश—अच्छा माँ, अपनी लडकी का ऐसे सुपात्र के स
विवाह करना, जिससे आपको भी मदद मिले।

माँ—नही बच्चा, मेरी यह इच्छा नही है। थोडे रुपयो
लोभ से मैं उसे किसी कुपात्र के हाथ मे नहीं देना चाहत
मेरी बेटी नीलिमा बडी गुणवती है। अच्छा लडका ढूँढने
लिए बहुत सा रुपया भी तो चाहिए।

सुरेश—ऐसी गुणवती और सुन्दरी बालिका के उप
में भी क्या रुपया देना होगा ?

माँ—बेटा, अभी तुम बच्चे हो, ससार की बातो से अ
भिज्ञ हो, ससार मे रुपया ही एक ऐसी चीज है जिससे
सुख मिलते हैं।

इतने में पानी बरसना बन्द हो गया। सुरेश बाबू ने क
अच्छा माँ, अब मैं जाता हूँ।

माँ—जाओ बेटा। लेकिन भीगे कपडे पहिने हो बडा
होगा।

सुरेश—मैं फिर किसी दिन आऊँगा और आपकी लड
के लिये कोई अच्छा वर ढूँढ कर विवाह सम्बन्धी बात करूँग
उसका भार मेरे ऊपर रहा।

कृतज्ञता के साथ नीलिमा की माँ ने कहा "हम गरीबो
माँ-बाप आप ही लोग हैं। यदि आप दया करे तो कृतार्थ हूँगी
सुरेश ने इन बातो का कोई जवाब नहीं दिया और अपने

की ओर रवाना हुए।

सुरेश के चले जाने पर नीलिमा बाहर आई और माँ से पूछा—'माँ, यह कौन थे ?'

माँ ने कहा—नहीं पहिचानती ? अपने जमींदार के पुत्र सुरेश बाबू थे। सुरेश बाबू बड़ा नेक और सुशील लड़का है। भगवान उसकी उम्र बढ़ावें। नीलिमा ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब माँ ने कहा, बेटी नीलम, संध्या हो गई है, जाओ दिया जलाओ। फिर मेह न बरसने लगे इस लिए दिन रहते ही रसोई बना लो।

नीलिमा—क्या बनाऊँ ?

माँ—क्यों, चावल के किनके तो हैं।

नीलिमा—(बड़े दुख से) माँ, वह तो कल ही निपट गये थे।

माँ—तो कुछ भी नहीं है ?

नीलिमा न नीचे सिर किये हुए उत्तर दिया—नहीं माँ।

माँ—तो क्या आज फिर उपवास करना पड़ेगा ?

नीलिमा—माँ, इसमें दुखी होने की क्या बात है ? एक दिन म भूखा रहने से क्या बिगड़ जायगा।

माँ बहुत दुखी हुई। दरिद्र तो इस जगत में मनुष्यों पर जैसा प्रहार करता है, वज्र भी कदाचित वैसा न कर सकेगा।

दोनों माँ-बेटी भूखी ही सो गईं। माँ की सुखद गोद में नीलिमा बेसुध हो सो गई। पर माँ को रात भर नींद नहीं आई। वह रह-रह कर अपने बीते समय की बातें याद करती,

और आंसू बहाती थी। बार-बार स्नेह से नीलिमा के ऊपर हाथ फेरती और कहती, मेरी प्यारी बेटी, मैं तुझे सुखी न कर सकी। पर भगवान से प्रार्थना करती हू कि तुझे सुखी करे।

२

सुरेश बाबू ने मकान पर पहुँच कर हाथ-मुँह धो कपडे बदले। फिर रामायण उठा कर पढने लगे। धीरे-धीरे रात हो गई। भोजन से निवृत्त हो कर शयन किया, लेट कर सोचने लगे, मैने जो नीलिमा की माँ से कहा है कि मै नीलिमा के लिए उपयुक्त खोजूँगा, परन्तु पाऊँगा कहाँ? नीलिमा ऐसी सुन्दरी और गुणवती बालिका के लिए उसी के समान वर चाहिए। ओह! उन लोगो को कितना कष्ट होता है, किसी दिन भोजन मिलता है, किसी दिन नही। विधाता ने क्या इतना कष्ट सहने के लिए सौन्दर्य का निर्माण किया है? यह कभी नही हो सकता? वह सुन्दरी नीलिमा अवश्य ही किसी प्रासाद की अधिकारिणी होगी। मेरा भी विवाह नहीं हुआ है। पिता सुन्दर कन्या की तलाश मे हैं। लेकिन, नीलिमा यह भी तो सुन्दर और गुणवती है। क्या पिता उसके साथ मेरी विवाह कर देंगे? आपत्ति करने का इसमे कोई कारण नहीं है—हाँ, गरीब की लडकी है। लेकिन मैं तो ससुर के रुपये नही चाहता। जिसे लेकर आजीवन सहवास करूँगा। जो मेरी अर्धांङ्गिनी होगी। वह यदि मेरे मन के

लायक हो, तो उनको आपत्ति करने का क्या प्रयोजन? जब नीलिमा की माँ सुनेगी तो कितनी खुश होगी। पर पिता को मना लेना सहज नहीं है।

इस तरह सोचते सोचते सुरेश का मस्तिष्क क्षुब्ध हो उठा। रात भर नींद नहीं पड़ी सुरेश सुबह उठ कर कमरे में बहुत देर तक टहलते रहे। आखिर में किसी तरह विचारों का आना बन्द नहीं हुआ तो उठ कर हाथ-मुँह धोया और वायु-सेवन के लिये निकले। सन्ध्या और प्रातःकाल भ्रमण करना उनके जीवन का एक मुख्य कार्य था। आज चिन्ता के मारे सुरेश बाबू को टहलने में भी आनन्द नहीं आया। वहाँ से भी जल्दी लौट आये।

डेरे पर आकर सुरेश बाबू ने सिपाही को बुलाकर कहा—"बाजार से जाकर अच्छे चावल ले आओ।"

सिपाही रुपया लेकर बाजार चावल लाने चला गया।

नौकर ने आकर कहा—बाबू जी, स्नान कर लीजिये।

सुरेश बाबू—मेरी तबीयत खराब है। कल रात को नींद नहीं आई। थोड़ी देर में जाकर नदी में स्नान करूँगा।

थोड़ी देर बाद सुरेश बाबू एक नौकर के साथ नदी पर स्नान करने गये। नीलिमा के घर के सामने होकर नदी को जाना होता है। सुरेश बाबू ने सोचा दोनों काम हो जायेंगे। नदी से स्नान भी और नीलिमा से शायद बात करने का मौका मिल जाय।

सुरेश बाबू जाते समय मकान के पास ही होकर गये पर उनकी आशा पूरी नहीं हुई। नीलिमा उन्हे कही दिखाई नहीं पडी। स्नान करके लौटती बार नीलिमा उन्हे रास्ते मे मिली। वह जल भर कर ला रही थी। सुरेश बाबू नौकर के साथ धीरे-धीरे चलने लगे। नीलिमा ने घर जाकर माँ को आवाज दी। माँ ने कहा, क्या है बेटी ?

नीलिमा—माँ, मैं स्नान कर आई। अब तुम भी जाकर निपट लो और चावल मिले तो लेती आना।

सुरेश बाबू धीरे-धीरे चल कर नीलिमा के घर तक आये। नीलिमा के घर के सामने पहुँच कर उन्होंने देखा, नीलिमा एक फटी साडी पहिने गीली धोती बाँस पर फैला रही थी। उनकी केशराशि उस समय पीठ पर लोट रही थी। मोती जैसे दांत रक्ताधर में चमक रहे थे। सुरेश बाबू यह रूप देखकर मुग्ध हो गये। पर नीलिमा उन्हें देख न सकी। उसके घर को चारो तरफ से वृक्षों ने घेर रक्खा था। उनकी ओट से वह कैसे देख सकती थी। न नीलिमा को देखने का अवसर ही था। उसके छोटे से मस्तिष्क मे यह घूम रहा था। आज घर में चावल का एक किनका भी नहीं है। कल रात से उन लोगों को उपवास में ही बीता था। आज फिर चावल नहीं है। इस तरह कितने दिन काम चलेगा। नीलिमा दो एक ककडी का प्रबन्ध करने और स्नान कर पानी लेने नदी पर आई थी। और माँ चावल के लिये पडोस में गई, पर खाली हाथ लौट आई। कहीं एक

मुट्ठी चावल नहीं मिला। माँ निराश हो कर घर की देहली पर बैठ गई। उसका निराश मुख देख कर नीलिमा ने समझ लिया कि माँ चावल का प्रबन्ध न कर सकी। नीलिमा ने धोती सूखने डाल कर पूछा—"शायद चावल कहीं नहीं मिले।"

माँ—गाँव में कौन ऐसा अमीर है बेटी, जिसके पास इतना चावल है कि अपना खर्च चला कर दूसरों को उधार देदे। अरे, हमारे ऐसे ही कितने ही भूख की ज्वाला से तड़पते हैं।

नीलिमा—तो अब क्या होगा?

माँ की आँखों में पानी भर आया उसने कहा—बेटी नीलिमा, अब क्या करूँ? अपने पेट के लिए मैं नहीं सोचती, लेकिन तू मेरी सयानी बेटी है। तेरे खाने पीने के दिन हैं। भोजन न मिलने से तेरा मुख सूख गया है। तुझे भूखा देख मुझे कितना दुख होता है। तेरे कपड़े भी फट गये हैं। यह दुख क्या कभी सहन हो सकता है। अब विलम्ब न करूँगी। जैसे होगा तेरा विवाह कर दूँगी। जिससे तुझे तो कम से कम भोजन का कष्ट न सहना पड़ेगा।

नीलिमा ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह माँ के समीप ही बैठ गई।

सुरेश बाबू ने बाहर खड़े होकर सब सुना। सुनकर उन्हें बहुत दुख हुआ। हा! अन्न के अभाव से इन लोगों को कितना कष्ट है। वे अब और उस स्थान पर खड़े न रह सके। जल्दी-

जल्दी पैर बढ़ाकर निवास-स्थान पर पहुँचे। वहाँ जाकर देखा सिपाही चावल ले आया है। सुरेश बाबू चावल देख बहुत खुश हुए। सिपाही से कहा, यह चावल एक जगह पहुँचाना होगा।

सिपाही—सरकार नौकर सब चले गये हैं। इतने चावल मैं अकेला कैसे ले जाऊँगा?

सुरेश बाबू—तो और किसी को बुलालो।

सिपाही बाहर जाकर दो आदमियो को ले आया। और पूछा—चावल कहाँ दे आना होगा?

अब सुरेश बाबू सोच में पड गये। उन्हे मालूम न था कि वह किसका मकान है? और बुढिया का क्या नाम है? उन्होने कहा—नदी की ओर जाते हुए चारो तरफ पेडो से घिरा हुआ एक पुराना, कच्चा मकान है, उसमें एक गरीब बुढिया रहती है, उसे ही दे आना होगा।

सिपाही ने पूछा—कौन, उसका क्या नाम है?

सुरेश—मैं उसका नाम वगैरा कुछ नहीं जानता।

सिपाही—वह कौन जाति है?

सुरेश बाबू—शायद वह ब्राह्मण है।

जो नौकर सुरेश के साथ नदी पर गया था, वह बहुत पुराना नौकर था। उसे जमींदार के घर काम करते बीस साल से ज्यादा हो गये थे। वह जानता था कि सुरेश बाबू बहुत ही सीधे और चरित्रवान हैं। फिर भी यौवन का नशा कुछ और

ही होता है । जिस समय नदी से लौटते हुए नीलिमा के मकान के पास सुरेश बाबू खड़े हो गये थे, उसी समय उसे कुछ सन्देह हुआ था। यह चावल उसी घर में पहुँचाना होगा। सुनकर सहज ही में वह सब कुछ समझ गया। ऐसी सुन्दरी के घर इतने चावल अगर बाबू साहब भेजते हैं, तो कौन बड़ी बात है ? तब उसने कहा—नीलिमा की माँ का मकान कह रहे हैं क्या ?

सुरेश बाबू—यह नहीं जानता। कल जब पानी बरस रहा था, तब उन्हीं के मकान में ठहरा था। सुना है, उन लोगों को बहुत कष्ट है। चावल के अभाव से भोजन तक नहीं मिलता।

बूढ़ा मन ही मन हँसा। यह कल के लड़के मुझ से छिपाते हैं। यह दिन ही ऐसे हैं। अरे भाई, जब इतनी सुन्दर वह लड़की है, मित्र, उसके दुख में दुखी होना कौन बड़ी बात है।

तब बूढ़ा कहने लगा—हाँ हाँ, बाबू साहब, उन लोगों को बहुत ही कष्ट है। चावल न मिलने से तो उन्हें भूखा भी रहना पड़ता है।

नदी के किनारे पेड़ों से घिरा हुआ कच्चा घर है वहाँ दो माँ बेटी रहती हैं। लड़की का विवाह नहीं हुआ है। लड़की बहुत सुन्दर है।

सुरेश बाबू ने अपने मन की बात छिपाते हुए कहा—लड़की के बारे में नहीं पूछता। हाँ, मकान वही है।

नौकर ने सिपाही से कहा—ले जाओ, उस मकान में दे आओ।

सिपाही ने बाबू साहब के मुँह की ओर देखा। बाबू साहब ने कहा—हाँ, दे आओ।

सिपाही और दोनों मजदूर चावल लेकर चले गये। सुरेश बाबू की इच्छा थी कि साथ में कुछ खर्च के लिए भी भेज दे। लेकिन यह न हो सका। इतना पुराना नौकर, उनके पिता के बराबर की उम्र का, उसका लिहाज करना पड़ा।

३

मॉं-बेटी दोनो बैठी हताश मन मे कुछ सोच रही थीं। कल रात भोजन नही मिला, आज भी मिलने की आशा नहीं। अब कै दिन और ऐसे काम चलेगा। नीलिमा की माँ कई पड़ोसियो के घर हो आई, कहीं एक मुट्ठी चावल नही मिला। हाय, इस तरह कैसे होगा। बिना खाये मनुष्य कै दिन रह सकता है?

वे दोनो मन मारे बैठी यही सोच रही थीं कि सुरेश बाबू के भेजे हुए आदमी चावल लेकर आ पहुँचे। उन्होने चावल का बोझा जमीन पर पटक दिया।

माँ ने पूछा—इसमें क्या है?

उसने समझा वह लोग या तो अपनी चीज यहाँ रखे जा रहे हैं, या भूल से दूसरे की हमारे घर ले आये हैं। किसी ने इतने चावल उनके लिये भेजे हैं। यह उनको क्या मालूम था। इस ससार में उनका कोई नहीं था। इतने चावल भला कौन

चाहिए कि वह मुझसे प्रेम करते हैं।। इसी तरह सोचते-विचारते नीलिमा ने चूल्हा जलाकर चावल बना लिये और दोनों माँ-बेटी ने भोजन किया।

\+ \+ \+ \+

संध्या होते ही मुनीम जी आ पहुँचे।

सुरेश बाबू—कहां गये थे मुनीम जी?

मुनीम—आपके घर।

सुरेश बाबू—क्यों?

मुनीम—रामलाल ने रुपयों का सख्त तकाज़ा किया है। इसलिए कुछ मोहलत लेने गया था। पर नहीं दी। कल शाम तक रुपये जमा करने पड़ेंगे।

सुरेश बाबू—पिताजी से मुलाकात हुई थी?

मुनीम—हाँ, हुई थी। उन्होंने आपको घर जाने के लिए कहा है।

सुरेश बाबू—ठीक है, कल जाऊँगा। आप सवारी का इन्तज़ाम कर रखना।

मुनीम—आज ही सवारी ठीक कर दूँगा।

इसके बाद मुनीम ने सिपाहियों को बुलाकर कहा कि आज तुम लोगों को तकाज़े पर जाना होगा। क्योंकि रिन्त का

माँ ने नीलिमा की तरफ देखकर कहा—बेटी, सुरेश बाबू ने हमारे लिये इतने चावल क्यों भेजे हैं ?

नीलिमा ने कहा—माँ, मुझे क्या मालूम ? मैं किस तरह बता सकती हूँ ? जहाँ तुम हो वहाँ मैं भी हूँ।

माँ के चित्त में एक गहरे आनन्द की लहर लहराने लगी। उसने मन ही मन सोचा, सुना है कि सुरेश बाबू की शादी नहीं हुई है। उस रोज कहा भी था। नीलिमा के विवाह का भार मेरे ऊपर रहा। शायद मेरी नीलिमा को देख कर सुरेश बाबू को दया आ गई होगी। अगर ऐसा हो गया तो मेरी नीलम राजरानी होगी।

उनके समान धनी और कौन है। इस गाँव में बाबू किशोरी लाल का नाम हो रहा है। अगर जमींदार किशोरी लाल अपनी स्वीकृत देदे तो ठीक है। अगर लड़का खुद ही शादी करने की जिद पकड़े तो पिता की नहीं चल सकती। हार कर पिता को राजी होना ही पड़ेगा।

बुढ़िया ने चावल उठाकर रख दिये। नीलिमा चूल्हा जलाने चली गई। नीलिमा सोचने लगी, तो क्या सुरेश बाबू ने मुझे देखा है ? क्या सुरेश बाबू मुझसे प्रेम कर सकते हैं ? कहाँ मैं एक गरीब की लड़की और कहाँ वह उतने बड़े आदमी ! उनको मुझसे अच्छी-अच्छी लड़की मिल जायगी। नहीं यह बात नहीं है ! उन्होंने हम लोगों की गरीबी देखकर दयाभाव से ही चावल भेजे हैं। उसका मतलब यह नहीं निकाल लेना

चाहिए कि वह मुझसे प्रेम करते हैं। इसी तरह सोचते-विचारते नीलिमा ने चूल्हा जलाकर चावल बना लिये और दोनों माँ-बेटी ने भोजन किया।

\+ + + +

सध्या होते ही मुनीम जी आ पहुँचे।

सुरेश बाबू—कहाँ गये थे मुनीम जी ?

मुनीम—आपके घर।

सुरेश बाबू—क्यों ?

मुनीम—रामलाल ने रुपयों का सख्त तकाज़ा किया है। इसलिए कुछ मोहलत लेने गया था। पर नहीं दी। कल शाम तक रुपये जमा करने पड़ेंगे।

सुरेश बाबू—पिताजी से मुलाकात हुई थी ?

मुनीम—हाँ, हुई थी। उन्होंने आपको घर जाने के लिए कहा है।

सुरेश बाबू—ठीक है, कल जाऊँगा। आप सवारी का इन्तजाम कर रखना।

मुनीम—आज ही सवारी ठीक कर दूँगा।

इसके बाद मुनीम ने सिपाहियों को बुलाकर कहा कि आज ही सब लोगों को तकाज़े पर जाना होगा। क्योंकि किस्त का रुपया आज ही अदा करना पड़ेगा।

वे लोग चारों तरफ गये। कुछ देर में किसान लोग आ आ कर खड़े हो गये। मुनीम ने किसानों से रुपया वसूल करने

के लिये तरह-तरह से सताना शुरू किया। यह किसी की मा
मर्यादा का ध्यान नहीं रखता। कहनी-अनकहनी जो चाह
कहता। कहीं गाली-गलौज देता। इतने पर भी वस नही थ
किसी-किसी बेचारे को तो मार भी खानी पड़ती।

उन लोगो का क्या अपराध था? प्रबल बाढ से उन
सर्वस्व नष्ट हो गया था। घर में बाल-बच्चो के खाने त
के लिये नही था। साल भर महाजनो से लेकर खाया औ
उन्ही से कर्ज लेकर दे रहे हैं। अभी तक महाजन को कु
भी न दे सके।

प्रात सब ने मिलकर एक दरख्वास्त जमींदार के पास इ
आशय की भेजी थी कि जब तक जमीन वगैरा ठीक न हं
जावे, लगान वसूल न किया जाये। जमींदार ने कुछ जवा
नहीं दिया। लोग भी चुप थे। फिर एकाएक कहला भेजा वि
कल दोपहर तक रुपया अवश्य चाहिए। पर वे बेचारे कहाँ से
लायें?

कौन उन लोगो की इस सकट मे रक्षा करेगा? वे लोग
पाँच दिन का इकरार कर रहे थे, पर मुनीम यह बात नही
सुनता था। दूसरे के हृदय की कौन जान सकता है, जब तक
अपने ऊपर न बीती हो। वे गरीब क्या करे, कहाँ से रुपये
लावें। ऐसे सकट के समय कौन उनका उद्धार करे। वे दीन
गरीब किसान लोग, अपमान, घृणा व लज्जा से व्याकुल हो
उठे। वह स्थान मानो विषाद का साक्षात् स्वरूप देख पड़ने लगा।

बेचारे गरीब किसानों को कोई उपाय न दीख पड़ता था। जमींदार के लगान वसूली से सारे ग्राम में कुहराम मच गया। सब लोग भय से काँपने लगे। नीलिमा की माँ को भी बहुत चिन्ता हुई। जो लोग उसकी जमीन जोतते थे उन्होंने दो वर्षो से उसे कुछ भी नहीं दिया। वह जमींदार का रुपया कहाँ से देगी। घर में तो कुछ नहीं है। बीस रुपये से अधिक देना है। हाय मैं कहाँ से दे सकूँगी? मुनीम जैसा अत्याचार कर रहा है, उससे तो लज्जा भी नहीं बचती दिखाई देती। लेकिन अब क्या उपाय किया जावे। हे भगवान! हम गरीबों के तुम्हीं एक सहारे हो। प्रभु तुम्हारे सिवाय और किससे प्रार्थना करूँ। नीलिमा की माँ गाल पर हाथ धरे बड़े सोच में पड़ी है। उसने एक अपने रिश्तेदार को बुला भेजा था। इसी समय वह वहाँ पर आया है।

नीलिमा की माँ ने कहा—बेटा घीसू, मेरी जमीन बन्धक रखकर कहीं से रुपया ला सकते हो? नहीं तो मान-मर्यादा बचनी भी मुश्किल दिखाई देती है?

घीसू ने कहा—मैं भी अपनी जमीन बन्धक रखने के लिये गाँव के सब लोगों के पास चक्कर लगा आया, पर कहीं रुपया नहीं मिला।

माँ—तो फिर क्या उपाय किया जावे?

घीसू—यही तो मैं भी सोच रहा हूँ।

घीसू चला गया। नीलिमा की माँ ने जो उपाय सोचा था,

वह भी नहीं हुआ। तब वह सोचने लगी, हाय, मैं क्या करूँगी? एक बार सिपाही बुला गया है। फिर बुलाने आवेगा तब क्या करूँगी। रुपयों का इन्तजाम हो जाता तो भेज देती। लेकिन रुपया? रुपया कहाँ से आवे। एक जमीन का ही सहारा था वह भी घीसू इन्कार कर गया है। भगवान अब क्या करूँ?

इधर सब लोग दूसरे दिन का वायदा कर चले गये थे। जो लोग नहीं आये थे, मुनीम ने उन्हें पकड़ लाने का सख्त हुक्म दिया। कई आदमियों के नाम बताने के बाद नीलिमा की माँ का नम्बर आया।

सिपाही बुलाने गया। दूर पर बैठे सुरेश बाबू ने जब नीलिमा की माँ का नाम सुना तब उन्होंने मुनीम को बुलाकर कहा—तुमसे कहना भूल गया। आज मैं नदी किनारे टहलने गया था, तब नीलिमा की माँ ने मुझसे गिड़गिड़ा कर कहा था आज रुपयों का इन्तजाम नहीं हो सकता। कल सुबह तक रुपये भेज दूँगी।

सुरेश बाबू की बातों से मुनीम झल्ला गया पर बेचारा करता क्या? उसे ये बातें अच्छी न लगीं। उसे ऐसा मालूम होने लगा उसका प्रभुत्व घट गया। उसने वैसी ही लाल आँखें करके नौकर से कहा—जा, सिपाही को लौटा ला। मुझे क्या? इस तरह रुपया वसूल नहीं हो सकता।

सुरेश बाबू कहने लगे—एक आदमी के लिए रुपया वसूल नहीं हो सकता, यह बात नहीं है। क्या वह देना नहीं चाहती है?

कल सुबह तक देने को कहा है। इसी लिए अगर रुपया वसूल नहीं होता है तो हमे ऐसे आदमी की जरूरत नहीं है। यह कह कर सुरेश बाबू वहाँ से उठकर चले गये।

शाम हुई, सुरेश बाबू नदी किनारे घूमने चले गये। उनका विचार नीलिमा से बाते करना था। नीलिमा और उसकी माँ दरवाजे पर ही बैठी थीं।

माँ—मेरा मन इस समय बहुत व्याकुल है। न जाने मुनीम रुपयो के लिए किस प्रकार अपमानित करेगा?

नीलिमा—आज तो उसने हमको नहीं बुलाया। मुहल्ले के जो लोग नहीं गये थे, उन सब को पकड़वा मँगवाया है। शायद हमें बहुत ही गरीब समझ कर नहीं बुलाया।

माँ ने दीर्घश्वास लेकर कहा—बेटी, जमींदार का मुनीम कहीं गरीबो का ख्याल करता है? सम्भव है भूल गया हो, या शायद जरा देर बाद बुलावे।

नीलिमा—अब क्या होगा, माँ?

माँ—यही तो मै भी सोच रही हूँ।

नीलिमा—हम लोगो का कोई उपाय नहीं। एक न एक संकट आ ही जाता है।

सुरेश बाबू नीलिमा के दरवाजे पर पहुँच गये थे, पर दोनो माँ बेटी की बाते होते देख, पेड़ की आड़ मे खड़े रहे। उन्होंने वहीं से सब बातें सुनली। थोड़ी देर ठहर कर वहाँ आ गये।

नीलिमा की माँ ने जमींदार के पुत्र को सामने खडा देख वडे सम्मान के साथ कहा—बेटा, आओ। यह कर वह उठकर जाने लगी। पर सुरेश बाबू ने कहा—बैठो माँ, मैं एक जरूरी काम से आया हूँ।

सुरेश बाबू बैठ गये। कुछ दूर पर नीलिमा बैठी हुई थी। नीलिमा ने अपने युगल नयन विस्फुरित कर एक बार सुरेश बाबू की तरफ देखा। सुरेश बाबू तो उस तरफ देख ही रहे थे। दोनों की चार आँखे हो गई। दोनो ही एक अभूत-पूर्व सुख का अनुभव करने लगे।

नीलिमा उठकर जाने लगी, तो माँ ने कहा—बेटी, बैठ कहा जा रही है? उसकी माँ की भी यही इच्छा थी कि अगर सुरेश बाबू मेरी कन्या से प्रेम करते हो तो उसकी आशा पूर्ण होगी। उसकी लडकी राज राजेश्वरी होगी। इसलिए उसने नीलिमा को उठने नही दिया। नीलिमा भी वहीं बैठी रही। तब सुरेश बाबू ने नीलिमा की माँ की तरफ देखकर कहा—आप की तरफ लगान का कितना रुपया चाहिये?

माँ—बहुत रुपया है बेटा!

सुरेश बाबू—इस बार की वसूली में कितना देना पडेगा?

माँ—बीस रुपये से ज्यादा।

सुरेश बाबू—आप लोगों के लिए मुनीम आदमी भेज रहा था, मैंने मना कर दिया है। कल आदमी आवेगा। रुपयों के लिए बड़ी सख्ती की जा रही है। लोगों से बडी कडाई से

रुपया वसूल किया जा रहा है। आप लोगो ने रुपया का क्या इन्तजाम किया या नही ?

माँ—कुछ भी नहीं बेटा ! घर में एक पैसा भी नहीं है। अभी तक बैठी यही सोच रही हूँ।

सुरेश—यह तो बड़ी मुश्किल की बात है।

उसी समय नीलिमा की माँ को पडोसिन ने बड़े जोर से चिल्ला कर बुलाया। उसके लडके का फैन्टस्त हो रहे थे। लड़के का बुरा हाल था।

यह कहकर वह चली गई। नीलिमा भी जाने लगी। यह देख उसने कहा—बेटी, तू यही पर रह। मै अभी आती हूँ।

उसके चले जाने पर सुरेश बाबू ने नीलिमा से कहा—मुझे प्यास लगी है, थोडा पानी दो।

नीलिमा ने भीतर से पानी लाकर दिया। पानी पीकर सुरेश बाबू ने कहा—"तुम्हारा नाम नीलिमा है।"

नीलिमा ने मदस्वर मे कहा—हाँ।

उस मधुर कठ से हाँ सुनकर सुरेश बाबू मुग्ध हो गये। सुरेश बाबू ने कहा, तुम्हारी माँ रुपयो के लिय चिन्तित हो रही है। तुम रुपया लोगी ?

नीलिमा—मैं रुपया लेकर क्या करूँगी ? जरूरत पडने पर माँ लेगी।

सुरेश बाबू ने हँस कर कहा—तुम्हारी माँ बूढ़ी हुई। ब्याज नही, फल नहीं या हिसाब है। उन्हें उधार देने में डर

नीलिमा की माँ ने जमींदार के पुत्र को सामने खड़ा देख बड़े सम्मान के साथ कहा—बेटा, आओ। यह कह वह उठकर जाने लगी। पर सुरेश बाबू ने कहा—बैठो माँ, मैं एक जरूरी काम से आया हूँ।

सुरेश बाबू बैठ गये। कुछ दूर पर नीलिमा बैठी हुई थी। नीलिमा ने अपने युगल नयन विस्फुरित कर एक बार सुरेश बाबू की तरफ देखा। सुरेश बाबू तो उस तरफ देख ही रहे थे। दोनों की चार आँखें हो गई। दोनो ही एक अभूत-पूर्व सुख का अनुभव करने लगे।

नीलिमा उठकर जाने लगी, तो माँ ने कहा—बेटी, बैठ कहाँ जा रही है? उसकी माँ की भी यही इच्छा थी कि अगर सुरेश बाबू मेरी कन्या से प्रेम करते हों तो उसकी आशा पूर्ण होगी। उसकी लड़की राज राजेश्वरी होगी। इसलिए उसने नीलिमा को उठने नहीं दिया। नीलिमा भी वहीं बैठी रही। तब सुरेश बाबू ने नीलिमा की माँ की तरफ देखकर कहा—आप की तरफ लगान का कितना रुपया चाहिये?

माँ—बहुत रुपया है बेटा!

सुरेश बाबू—इस बार की वसूली में कितना देना पड़ेगा?

माँ—बीस रुपये से ज्यादा!

सुरेश बाबू—आप लोगों के लिए मुनीम आदमी भेज रहा था, मैंने मना कर दिया है। कल आदमी आवेगा। रुपयों के लिए बड़ी सख्ती की जा रही है। लोगों से बड़ी कड़ाई से

विवाह कर सकता है। उसका हृदय आनन्द से उछलने लगा। वह कुछ भी जवाब न दे सकी।

सुरेश बाबू ने देखा उसके युगल नयन जल से परिपूर्ण हैं। उन्हीं आँखों से वह उनके मुख की तरफ एकटक देख रही है। सुरेश बाबू बहुत देर तक प्रेमसागर में गोते लगाते रहे। इसके बाद कहा—नीलिमा, मेरी बात का जवाब दो। तुम मुझसे विवाह करने को राजी हो या नहीं ? सुरेश बाबू के बार-बार पूछने पर नीलिमा ने कहा—हाँ। मैं विवाह करने को राजी हूँ। पर मेरा भाग्य ऐसा कहाँ ? एक गरीब लड़की रानी बनने का हौसला करे। एक बौना होकर चन्द्रमा छूने की आशा करे ?

सुरेश बाबू ने कहा—नीलिमा, मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी। तब उन्होंने एक बंडल नोट निकाल कर नीलिमा को दिये। नीलिमा, इन नोटों को उठाकर रख लो। जब तक लौकिक विवाह नहीं होता, तब तक कुछ दे सकूँगा या नहीं। इसलिए शायद जरूरत पड़े। इन्हें तुम खर्च करना।

नीलमा—तो क्या तुम जा रहे हो, फिर कब आओगे ?

सुरेश बाबू—हाँ, मैं कल जा रहा हूँ। शायद जल्दी न आ सकूँ।

नीलिमा—क्यों ?

सुरेश बाबू—तुम्हारी इच्छा होगी तो फिर आऊँगा। तुम्हारे बिना देखे मुझे चैन नहीं पड़ेगा।

है। तुम अगर उधार लो तो दे सकता हूँ। लेकिन व्याज सहित रुपया अदा करना पड़ेगा।

नीलिमा—मैं आपको कहाँ से रुपये दूँगी? मेरे पास रुपये कहाँ हैं।

सुरेश बाबू—तुम्हारा विवाह हो जाने पर।

नीलिमा ने कोई जवाब नहीं दिया। सुरेश बाबू ने एक बार फिर उस सुन्दर मुख की तरफ देखा और मुग्ध हो गये।

सुरेश बाबू अब धैर्य न रख सके। वह नीलिमा से बोले—तुम मेरे घर की शोभा बढ़ाओगी। तुम मेरे अतुल धन की अधिकारिणी होगी। उस समय मेरा ऋण चुका देना। नीलिमा मैं सच कहता हूँ, मैं तुम्हें देखकर अपने को भूल गया हूँ। मैं तुम से कितना प्रेम करता हूँ, यह कह नहीं सकता। तुम्हारे रहते मैं किसी दूसरे से शादी नहीं करूँगा। जिस तरह से होगा तुमसे विवाह करने की कोशिश करूँगा। यदि तुमने स्वीकार न किया या तुम मुझसे प्रेम न कर सकी तो मेरे यह अन्तिम दिन हैं। मैं सन्यासी बनकर पहाड़ो पर, विचरूँगा। देश-देश मे वन-वन में तुम्हारी माधुरी-मूर्ति का ध्यान करूँगा। बोलो नीलिमा, तुम मुझसे विवाह करोगी या नहीं?

नीलिमा इस बात का क्या उत्तर देती? उसे कुछ जवाब नहीं सूझ पड़ा। उसके मुख से एक शब्द भी नहीं निकला। वह एक दृष्टि से सुरेश बाबू के मुख की तरफ देखती रह गई। उसे सपने में भी आशा न थी कि एक इतने धनी का पुत्र उससे

माँ—बेटा, तुम पहिले जन्म में हमारे कौन थे ? सवेरे जब हम लोग भूखे बैठे थे, तब हमारे लिए चावल भेज दिये। न भेजते तो निराहार रहती। भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।

सुरेश बाबू ने मुस्करा दिया। माँ, पहिले जन्म का कोइ रहा होऊँ या नहीं। पर इस जन्म में काई होने की चेष्टा में हूँ।

सुरेश बाबू ने यह बात इस ढँग से कही कि नीलिमा मुस्करा कर घर में चली गई। उसकी माँ यह सुनकर बड़ी खुश हुई।

उसने कहा—बेटा, तुम्हारा विवाह नहीं हुआ है, मेरी नीलिमा से विवाह क्या नहीं कर लेते ?

सुरेश बाबू—यह काम पिता जी को राजी करने से होगा। इतना कह सुरेश बाबू उठ खड़े हुए।

माँ—अभी से चल दिये बेटा !

सुरेश बाबू—हाँ, काम है। कल सुबह मकान पर जाऊँगा। पिता जी ने बुला भेजा है।

सुरेश बाबू कुछ देर खड़े रहे कि नीलिमा को चलते समय देख लें। पर यह न हुआ। बड़ी देर तक बाहर जाकर सुरेश बाबू खड़े रहे। पर नीलिमा घर से बाहर नहीं निकली। तब विवश हो सुरेश बाबू चले गये।

नीलिमा—(शरमाती हुई) हाँ, एक बात है, तुम मुझसे विवाह करोगे, यह बात माँ से किसी तरह कहते जाना।

सुरेश बाबू—यह तो मैंने पहिले ही सोच रक्खा है। रुपये भी उन्हें ही दूँगा, जिससे तुम्हारी माँ को किसी तरह का सन्देह न हो। पर विवाह की बात कहने से शायद रुपया न लें ?

नीलिमा—यदि सन्देह करे ?

सुरेश बाबू—तो मैं उसका उपाय करूँगा।

नीलिमा—कौन सा उपाय ?

सुरेश बाबू—लगान के रुपयो की बात उनसे कहता जाऊँगा।

नीलिमा कुछ न बोली। एकटक सुरेश बाबू की मनोहर छवि देखती रही। दोनो ही एक दूसरे के मुख की तरफ देख रहे थे। कितने सुख, कितने आनन्द की बात है। इस सुख को कौन वर्णन कर सकता है। थोड़ी देर बाद मा लौट आई। नीलिमा ने पूछा—अब लड़का कैसा है ?

माँ—कुछ अच्छा है।

यह कहकर वह बैठ गई। तब सुरेश बाबू ने कहा—रुपयों का क्या उपाय सोचा है ? यही जानने को मै आया हूँ।

माँ—उपाय क्या करूँगी बेटा, घर मे एक पैसा नहीं है।

सुरेश बाबू—मैं मुनीम से कहता जाऊँगा कि इस किस्त का रुपया आपको देना नहीं पड़ेगा।

माँ—बेटा, तुम पहिले जन्म मे हमारे कौन थे ? सवेरे जब हम लोग भूखे बैठे थे, तब हमारे लिए चावल भेज दिये। न भेजते तो निराहार रहती। भगवान तुम्हे सदा सुखी रखे।

सुरेश बाबू ने मुस्करा दिया। माँ, पहिले जन्म का कोइ रहा होऊँ या नही। पर इस जन्म में कोई होने की चेष्टा मे हूँ।

सुरेश बाबू ने यह बात इस ढँग से कही कि नीलिमा मुस्करा' कर घर में चली गई। उसकी माँ यह सुनकर बड़ी खुश हुई।

उसने कहा—बेटा, तुम्हारा विवाह नही हुआ है, मेरी नीलिमा से विवाह क्यो नहीं कर लेते ?

सुरेश बाबू—यह काम पिता जी को राजी करने से होगा।। इतना कह सुरेश बाबू उठ खड़े हुए।

माँ—अभी से चल दिये बेटा !

सुरेश बाबू—हाँ, काम है। कल सुबह मकान पर जाऊँगा !' पिता जी ने बुला भेजा है।

सुरेश बाबू कुछ देर खड़े रहे कि नीलिमा को चलते समय देख लें। पर यह न हुआ। बड़ी देर तक बाहर जाकर सुरेश बाबू खड़े रहे। पर नीलिमा घर से बाहर नहीं निकली। तब विवश हो सुरेश बाबू चले गये।

नीलिमा—(शरमाती हुई) हाँ, एक बात है, तुम मुझसे विवाह करोगे, यह बात माँ से किसी तरह कहते जाना।

सुरेश बाबू—यह तो मैंने पहिले ही सोच रक्खा है। रुपये भी उन्हें ही दूँगा, जिससे तुम्हारी माँ को किसी तरह का सन्देह न हो। पर विवाह की बात कहने से शायद रुपया न लें ?

नीलिमा—यदि सन्देह करे ?

सुरेश बाबू—तो मैं उसका उपाय करूँगा।

नीलिमा—कौन सा उपाय ?

सुरेश बाबू—लगान के रुपयों की बात उनसे कहता जाऊँगा।

नीलिमा कुछ न बोली। एकटक सुरेश बाबू की मनोहर छवि देखती रही। दोनो ही एक दूसरे के मुख की तरफ देख रहे थे। कितने सुख, कितने आनन्द की बात है। इस सुख को कौन वर्णन कर सकता है। थोड़ी देर बाद मा लौट आई। नीलिमा ने पूछा—अब लड़का कैसा है ?

माँ—कुछ अच्छा है।

यह कहकर वह बैठ गई। तब सुरेश बाबू ने कहा—रुपयों का क्या उपाय सोचा है ? यही जानने को मैं आया हूँ।

माँ—उपाय क्या करूँगी बेटा, घर मे एक पैसा नहीं है।

सुरेश बाबू—मैं मुनीम से कहता जाऊँगा कि इस किस्त रुपया आपको देना नहीं पड़ेगा।

माँ—बेटा, तुम पहिले जन्म में हमारे कौन थे ? सवेरे जब हम लोग भूखे बैठे थे, तब हमारे लिए चावल भेज दिये। न भेजते तो निराहार रहती। भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।

सुरेश बाबू ने मुस्करा दिया। माँ, पहिले जन्म का कोई रहा होऊँ या नही। पर इस जन्म मे कोई होने की चेष्टा मे हूँ।

सुरेश बाबू ने यह बात इस ढँग से कही कि नीलिमा मुस्करा कर घर में चली गई। उसकी माँ यह सुनकर बड़ी खुश हुई।

उसने कहा—बेटा, तुम्हारा विवाह नही हुआ है, मेरी नीलिमा से विवाह क्यों नही कर लेते ?

सुरेश बाबू—यह काम पिता जी को राजी करने से होगा। इतना कह सुरेश बाबू उठ खड़े हुए।

माँ—अभी से चल दिये बेटा !

सुरेश बाबू—हाँ, काम है। कल सुबह मकान पर जाऊँगा। पिता जी ने बुला भेजा है।

सुरेश बाबू कुछ देर खड़े रहे कि नीलिमा को चलते समय देख लें। पर यह न हुआ। बड़ी देर तक बाहर आकर सुरेश बाबू खड़े रहे। पर नीलिमा घर से बाहर नहीं निकली। तब विवश हो सुरेश बाबू चले गये।

नीलिमा—(शरमाती हुई) हाँ, एक बात है, तुम मुझसे विवाह करोगे, यह बात माँ से किसी तरह कहते जाना।

सुरेश बाबू—यह तो मैंने पहिले ही सोच रक्खा है। रुपये भी उन्हें ही दूँगा, जिससे तुम्हारी माँ को किसी तरह का सन्देह न हो। पर विवाह की बात कहने से शायद रुपया न लें?

नीलिमा—यदि सदेह करे?

सुरेश बाबू—तो मैं उसका उपाय करूँगा।

नीलिमा—कौन सा उपाय?

सुरेश बाबू—लगान के रुपयो की बात उनसे कहता जाऊँगा।

नीलिमा कुछ न बोली। एकटक सुरेश बाबू की मनोहर छवि देखती रही। दोनो ही एक दूसरे के मुख की तरफ देख रहे थे। कितने सुख, कितने आनन्द की बात है। इस सुख को कौन वर्णन कर सकता है। थोडी देर बाद मा लौट आई। नीलिमा ने पूछा—अब लडका कैसा है?

माँ—कुछ अच्छा है।

यह कहकर वह बैठ गई। तब सुरेश बाबू ने कहा—रुपयों का क्या उपाय सोचा है? यही जानने को मैं आया हूँ।

माँ—उपाय क्या करूँगी बेटा, घर मे एक पैसा नहीं है।

सुरेश बाबू—मैं मुनीम से कहता आऊँगा कि इस किस्त का रुपया आपको देना नहीं पडेगा।

माँ—बेटा, तुम पहिले जन्म मे हमारे कौन थे ? सवेरे जब हम लोग भूखे बैठे थे, तब हमारे लिए चावल भेज दिये। न भेजते तो निराहार रहतीं। भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।

सुरेश बाबू ने मुस्करा दिया। माँ, पहिले जन्म का कोइ रहा होऊँ या नहीं। पर इस जन्म मे कोई होने की चेष्टा में हूँ।

सुरेश बाबू ने यह बात इस ढँग से कही कि नीलिमा मुस्करा कर घर मे चली गई। उसकी माँ यह सुनकर बडी खुश हुई।

उसने कहा—बेटा, तुम्हारा विवाह नही हुआ है, मेरी नीलिमा से विवाह क्यों नही कर लेते ?

सुरेश बाबू—यह काम पिता जी को राजी करने से होगा। इतना कह सुरेश बाबू उठ खडे हुए।

माँ—अभी से चल दिये बेटा।

सुरेश बाबू—हाँ, काम है। कल सुबह मकान पर जाऊँगा। पिता जी ने बुला भेजा है।

सुरेश बाबू कुछ देर खडे रहे कि नीलिमा को चलते समय देख लें। पर यह न हुआ। बडी देर तक बाहर जाकर सुरेश बाबू खडे रहे। पर नीलिमा घर से बाहर नहीं निकली। तब विवश हो सुरेश बाबू चले गये।

४

सुरेश बाबू के चले जाने पर नीलिमा की माँ ने नीलिमा को बुलाया और पूछा—मेरे चले जाने पर सुरेश बाबू ने तुमसे क्या कहा था बेटी ?

नीलिमा—कुछ नही माँ।

नीलिमा ने सुरेश बाबू की सब बात छिपा ली। भला नीलिमा माँ से किस तरह अपने प्रेम की बात बताती ! अगर बराबर उम्र की सखी सहेली होती तो बात दूसरी थी।

माँ—सुरेश बाबू की बात चीत से ऐसा मालूम होता है कि आज्ञा मिलते ही वह तुम्हारे साथ विवाह कर लेंगे। अगर सुरेश के साथ तुम्हारा विवाह हो जाय तो हम लोगो का सारा दुख दूर हो जावे और मै अपनी नीलम बेटी को राज-रानी देख लूँ। क्या भगवान मुझ दुखिया की यह अभिलाषा पूरी करेंगे ? बुढिया की आँखो से आनन्द के आँसू छलक आये। उसने भक्तिभाव से दोनों हाथ जोडकर ईश्वर को प्रणाम किया।

उसने फिर कहा—सुरेश बाबू लगान के रुपयो की बात कहीं भूल न जाये। अगर वह मुनीम से कहना भूल गये तो इस विपत्त से कैसे छुटकारा होगा ?

नीलिमा—जब कह गये हैं तो मुनीम से जरूर कह दिया होगा।

दोनो माँ-बेटी उठकर घर के काम-काज मे लग गईं। नीलिमा सुरेश बाबू का चिन्तन करने लगी। रात भर नींद न आई। बार बार सुरेश बाबू की बात याद आती।

वह इतने बडे आदमी हैं, और मैं एक गरीब निर्धन की कन्या। भला उनके पिता जी मुझसे शादी करने को क्यो आज्ञा देने लगेंगे ? क्या उन्हे लडकियो की कमी है ? मेरी सी सुन्दर और गुणवती धनवान की कन्या उनके तलवे सहलायेंगी। मुझ ऐसी गरीब और निर्धन तो उनकी दासी के बराबर भी नहीं। क्या मेरी माँ की इच्छा पूरी होगी ? मैंने पूर्व जन्म मे कौन से ऐसे शुभकर्म किये हैं, जो ऐसा रूपवान, धनवान और गुणवान पति पाऊँगी। भगवान तेरी माया विचित्र है। कभी आशा, कभी निराशा के झोंके उसके कोमल दिल को हिला देते। इसी चिन्ता में नीलिमा की सारी रात कट गई। सुबह के समय मीठी हवा के झोंके से जरा उसे नींद आ गई, तो उसने एक मधुर सपना देखा। सुरेश बाबू के साथ नीलिमा की शादी हो गई है और नीलिमा की माँ बहुत खुश है। नीलिमा माँ के पैर छू कर आशीर्वाद ले रही है। सुरेश बाबू कह रहे हैं। माँ, अब तुमको कोई कष्ट न होगा। नीलिमा यह मधुर सपना देख गदगद हो गई। उसने धरती पर माथा टेक प्रणाम किया, हे भगवान! मेरा सपना सच हो।

इधर सुरेश बाबू ने आकर मुनीम से पूछा—सवारी का बन्दोबस्त हो गया ?

मुनीम—जी हाँ, हो गया है।

सुरेश बाबू—नीलिमा की माँ का इस किश्त में कितना रुपया चाहिए ?

मुनीम ने हिसाब बताया। सुरेश बाबू ने उतना रुपया ट्रङ्क से निकाल कर मुनीम को दे दिया और रसीद एक नौकर को दी कि कल सवेरे यह नीलिमा की माँ को दे आये।

दूसरे दिन सुबह सुरेश बाबू घर चले गये।

नौकर ने जाकर नीलिमा की माँ के दरवाजे पर आवाज लगाई। नीलिमा की माँ ने जब सुना कि जमींदार का नौकर बुला रहा है, तो बुढिया एकदम घबरा गई, और सोचने लगी, जो मैंने सोचा था वही हुआ। सुरेश बाबू मुनीम से रुपयों का कहाना भूल गये मालूम पडता है। अब मैं क्या करूँ ? कहाँ से रुपया लाऊँ ? किस तरह मेरी इज्जत बचेगी। हे ईश्वर! अब क्या उपाय करूँ ? प्रभु तू ही रक्षा कर।

नीलिमा की माँ डरती हुई दरवाजे पर आई। उसका मुँह उतर गया था। गला सूख रहा था। मुँह से आवाज नहीं निकलती था। पीछे-पीछे नीलिमा आई, पर नीलिमा के मन में न डर था न भय। वह सोचती थी, अगर वह मुनीम से कहना भूल गये होंगे, तो मेरे पास रुपया है उससे किस्त का रुपया अदा कर दूँगी।

नौकर ने कहा—सुरेश बाबू मकान गये हैं। उन्होंने तुम्हारी किस्त का रुपया अदा कर दिया है। लो यह रसीद !

नीलिमा की माँ ने नौकर के हाथ से रसीद ले ली और बार-बार सुरेश बाबू को आशीर्वाद देने लगी।

नीलिमा ने सुना कि सुरेश बाबू मकान गये हैं उसे बहुत दुःख हुआ। सुरेश बाबू ने एक ही बार की बात-चीत में नीलिमा पर ऐसा जादू कर दिया था कि नीलिमा पूरी तरह उनके प्रेम में फँस गई। नीलिमा ने सोचा, यह रहते तो कभी-कभी दर्शन तो मिल जाते। चलती समय एक बार मनोहर छवि के दर्शन न कर सकी। अब न मालूम कब तक दर्शन मिलेंगे। नीलिमा सुरेश बाबू के ध्यान में ऐसी डूब गई, उसे होश ही न रहा कि कब नौकर गया, क्या माँ से बात हुई? जब माँ ने नीलिमा से कहा—बेटी, चलो अन्दर चलें। यहाँ कब तक खड़ी रहोगी। तब नीलिमा को होश हुआ। वह लज्जा से पानी पानी हो गई। माँ ने मेरे प्रेम की बात जान ली। पर क्या नीलिमा यह नहीं जानती कि माँ को यह जानकर खुशी ही हुई होगी।



सुरेश घर पर आकर पिता के कहे के अनुसार कामों में लग गये। पर प्राण नीलिमा के तरफ ही खिंचे रहते। नीलिमा की भोली सूरत उनके सामने से न हटती। वह सोचते क्या मेरे मन की बात पूरी होगी ? क्या मैं नीलिमा से शादी कर सकूँगा। मैं पिता जी से किस तरह कहूँ। अगर उन्होंने साफ इन्कार कर दिया तब ? वह रात-दिन यही सोचते कि किस तरह नीलिमा को प्राप्त करें ? किस प्रकार वह उसके हृदय-राज्य की अधिकारी हों ? हाय ! चलते समय एक बार उस प्यारी छवि को क्यों न देखा ? मेरा दिल नीलिमा के पास ही दौड़ दौड़ कर जाता है। चाहे कितना रोकूँ मेरा हृदय क्यों इतना घबराता है ? किस प्रकार उसे पाऊँ। पिता जी से अभी कहना ठीक नहीं है। जब वह खुद ही शादी की चर्चा चलावें, तब उनसे प्रगट करना ठीक होगा। पर एक बार नीलिमा को देखे बिना चैन न मिलेगा। चलकर उस कोमल को एक बार देखना चाहिए। हो, 'हृदय धीरज रख' क्यों इतना उतावला हो रहा ?

सुरेश बाबू फिर वापिस लौट आये। जब नीलिमा ने सुना उसे बड़ा हर्ष हुआ। फिर सुरेश बाबू से बात करने का मौका मिलेगा। यह जान नीलिमा समय का इन्तजार करने लगी।

यह सोच वह सुख का अनुभव करने लगी, उसका अन्दाज़ा कौन लगा सकता है।

सुरेश बाबू गाँव आकर इस तरह कामों में उलझ गये, कि उनको नीलिमा के पास जाने की जरा भी फुरसत नहीं मिली।

नीलिमा सोच रही है कि उसे कहीं भूल तो नहीं गये। क्या वह अब नहीं आवेंगे? कहीं प्रणय प्रतिज्ञा अधूरी तो न रहेगी?

धीरे-धीरे रात हो गई। सुरेश बाबू जब नीलिमा से मिलने नहीं आये, तो नीलिमा को बहुत दुःख हुआ। वह धरती पर लोट-लोट कर रोने लगी। हाय मैं कैसी मूर्ख हूँ जो चाँद को छूना चाहती हूँ। मेरे ऐसे कहाँ भाग्य? मुझे ऐसी उम्मीद करनी ही नहीं चाहिए थी। मैंने यह क्या किया? कहाँ वह पारस और मैं पत्थर। मेरा और उनका कहाँ संयोग? नीलिमा ने रोते-रोते सारी रात काट दी।

× × × ×

दूसरे दिन सुबह नीलिमा नदी पर स्नान करने गई। सुरेश बाबू भी नौकर को लेकर उसी अवसर पर नदी स्नान करने को आये। दोनों ने एक दूसरों को देखा। किनारे पर बहुत से आदमी नहा रहे थे। उन दोनों की मुख से बात तो न हो सकी पर नयनों की मूक वाणी से दोनो ने अपने दिल का भाव प्रगट कर दिया।

नीलिमा ने अपनी सखी से सुनाकर कहा—चलो बहिन

जल्दी चलो। मा को दवाई देनी है। उनकी तबीयत ठीक नहीं है।

सुरेश बाबू ने नीलिमा के मन का भाव समझ लिया कि यह बात उनके सुनाने के लिए कही गई है। सुरेश बाबू ने नौकर से कहा, तू सब सामान लेकर जा, मैं थोड़ी देर मे आऊँगा। नीलिमा ने समझ लिया आज सुरेश बाबू जरूर आवेंगे। यह जान उसे खुशी हुई।

नीलिमा अपनी सखी के साथ घर गई। रास्ते में सखी ने पूछा—नीलिमा, जिनकी तरफ तू एकटक देख रही थी, वह कौन थे?

नीलिमा—चल चुडैल, मै किसकी तरफ देख रही थी। मै तो कहीं भी नहीं देख रही थी। तू झूट बोलती है।

सखी—नीलिमा बहिन, हमसे न छिपाओ। यह मद भरे नयन, यह तिरछी चितवन किसी चितचोर का चित्त चुराने को काफी हैं।

नीलिमा—अगर तू ऐसी बाते करेगी तो कल से तेरे साथ नदी स्नान करने को नहीं जाया करूँगी।

सखी—जाओ न जाओ हमारी बला से। न जाओगी तो अपने चितचोर को कैसी देखोगी?

नीलिमा—फिर वही बात! तू नहीं मानेगी।

सखी—तो बता तेरे प्रेमी का क्या नाम है?

नीलिमा—अच्छा तुम किसी से कहोगी तो नहीं। खा

मेरी कसम !

सखी—नहीं बहिन, मैं कसम खाती हूँ, मैं किसी से न न कहूंगी।

नीलिमा—(धीरे से सखी के कानो मे) "सुरेश बाबू"।

सखी—(चौंक कर) क्या हमारे जमींदार के लडके ?

नीलिमा—हाँ।

सखी—मेरी जलमुँही कहाँ तू और कहाँ वह। नीलिमा, यह बात पूरी उतरती नहीं दीखती। क्या उन्होने तुझे कोई विश्वास दिलाया है ?

नीलिमा—हाँ।

सखी—देख बहिन, यह बडे आदमी हैं। इनको किसी बात की कमी नहीं। मुश्किल तो हम गरीबों की है। बहिन, बहुत सोच विचार से काम करना। यह लोग तो फूल सूँघा और फेंक दिया। इनसे तो कोई कुछ न कहेगा पर हम लोगों की आफत है।

नीलिमा—नहीं बहिन, यह वैसे आदमी नहीं हैं। यह बहुत सीधे और सरल हैं। उन्होंने मुझे पूरा विश्वास दिलाया है।

दोनो सखी अपने अपने घर गई। पर नीलिमा यही सोचती थी। क्या सखी सच कह रही थी, या मेरे भाग्य पर जल रही थी ?

नीलिमा ने धोती सूखने डाल दी। जल का कलसा एक तरफ रख दिया और अपना कसीदा लेकर बैठ गई। माँ को

रात ही से बहुत जोरो से बुखार चढा है। नीलिमा सूत तैयार करके रुमाल बनाती फिर उसपर कसीदा काढती। स्वदेशी समझ कर लोग बडे प्रेम से खरीदते। नीलिमा माँ के पास बैठी कसीदा काढ रही थी। इतने में सुरेश बाबू आ पहुँचे। सुरेश बाबू को देखकर नीलिमा ने झट अपना कसीदा छिपा लिया। पर सुरेश बाबू की निगाहो ने देख ही लिया। उन्होंने कहा—देखे उसमें क्या है नीलिमा ?

नीलिमा के दोनो गाल लज्जा से लाल हो गये। उसने कहा—कुछ नही।

सुरेश बाबू—ऐसी क्या चीज है जो हमसे छिपाई जा रही है ?

नीलिमा चुप बैठी, नीचे सिर किये नाखून से धरती खुरचने लगी।

सुरेश बाबू ने झट नीलिमा का रूमाल उठा लिया और कहा—वाह ! नीलिमा, यह तो तुमने बहुत अच्छा बनाया है। वाह ! जितनी तुम सुन्दर हो उतनी गुणवती भी हो। यह रूमाल तो मैं लूँगा, दोगी ?

नीलिमा ने मुस्कराते हुए कहा—ले लो। यह रूमाल क्या चीज है, मेरा तो सर्वस्व ही तुम्हारा है।

सुरेश बाबू—अच्छा, इसकी क्या कीमत है ?

नीलिमा—जो पहिन देने को कहा था।

सुरेश बाबू ने झट नीलिमा को अपनी तरफ खींच लिया

और चाहा कि प्रेम से आलिङ्गन करे। नीलिमा छिटक कर छूट गई।

सुरेश बाबू—माँ को क्या हो गया है ?

नीलिमा—कल से उन्हें बहुत जोर से बुखार चढ़ा है।

सुरेश बाबू—अभी उतरा नहीं ?

नीलिमा—नहीं।

सुरेश बाबू—कब तक उतरने का समय है ?

नीलिमा—शाम तक।

सुरेश बाबू—अच्छा, मैं दवा भेज दूँगा। बुखार चढ़ने से पहिले ही सब दवा पिला देना। शायद मलेरिया है।

नीलिमा—अच्छा।

सुरेश बाबू चले गये। नौकर दवा दे गया। दवा ठीक-ठीक मिलने से नीलिमा की मा की तबीयत जल्दी ठीक हो गई।

सुरेश बाबू और नीलिमा का प्रेम दिन-दिन बढ़ने लगा। नीलिमा की माँ ने भी उसमें कुछ बाधा नहीं डाला। नीलिमा की माँ को पूरा विश्वास था कि सुरेश बाबू नीलिमा से शादी कर लेंगे। नीलिमा भी जानती थी पिता की आज्ञा मिलते ही सुरेश बाबू शादी करेंगे। युवक सुरेश सरला नीलिमा को जितना चाहते थे उतना ही नीलिमा भी उन्हें चाहती थी। उसके लिए सुरेश बाबू के सिवाय दुनिया में और कुछ न रह गया था।

एक दिन नीलिमा की माँ ने सुरेश से कहा—बेटा, तुमने

अपने पिता से शादी की बात चलाई थी। उन्होंने तुमसे क्या कहा ?

सुरेश बाबू—अभी तो कहा नहीं मा ! पर अवसर आने पर कहूंगा।

नीलिमा की माँ—बेटा, तो अवसर कब आवेगा ? मै तो यह चाहती हूँ कि जल्दी इस काम से निबट लूँ। जिन्दगी का क्या ठीक। बुढ़ापे का शरीर है।

सुरेश बाबू—अच्छा, अब की बार घर जाने पर पिता से बात करूँगा। जैसा होगा तुम्हें खबर दूँगा।

माँ—भूल न जाना बेटा। यह काम जल्दी ही हो जाय तो ठीक है।

सुरेश बाबू घर चले गये। धीरे-धीरे दो महीने हो गये। सुरेश बाबू के दिये रुपये भी खतम हो गये। न सुरेश बाबू ने घर जाकर कोई खबर भेजी। माँ-बेटी को फिर वही कष्ट, वही चिन्ता। मारे चिन्ता के नीलिमा की मा को फिर बुखार आने लगा। बुखार ने ऐसा दबाया कि उसका छूटना असाध्य सा दिखने लगा।

एक डेढ महीने की बीमारी में ही माँ ने अपनी पुत्री को निःसहाय अवस्था में छोड कर इस नश्वर संसार से पलायन कर दिया। नीलिमा ने जमीन बेच कर माँ की दाह-क्रिया की। बेचारी नीलिमा बिल्कुल असहाय हो गई। उसका अब रामपुर गाँव मे कोई न रह गया। पर बेचारी जाय भी

तो कहाँ जाय ? कोई अपना रिश्तेदार भी न था। एक सुरेश बाबू की तरफ से आशा है। उन्होंने भी दो महीने से कोई खबर नहीं ली है। नीलिमा सोचती है, न मालूम क्या बात है। क्या उनके पिता ने शादी की राय नहीं दी। या वह मुझ अभागिनी को भूल गये। कभी आशा कभी निराशा। इसी उधेड़बुन में नीलिमा पड़ी है। फिर भी एक क्षण आशा लिये नीलिमा सुरेश का इन्तजार कर रही है।

६

नीलिमा की माँ को मरे तीन महीने हो गये। अब नीलिमा बड़ी सावधानी से रहती है। एक पड़ोसिन विधवा रात को उसके पास सोने आ जाती है। नीलिमा को उसका बड़ा भरोसा है। संसार में सौंदर्य के बहुत से दुश्मन होते हैं। गुलाब के फूल पर सभी टूटते हैं। कौन होगा जो उसकी सुवास लेने का इच्छुक न हो। नीलिमा की भी यही दशा थी। सुन्दरी नीलिमा का अनुपम सौंदर्य है, चढ़ती जवानी है। इस लिए बहुतों की निगाह उस पर थी। अब तक तो नीलिमा की माँ की वजह से किसी का वस नहीं चलता था। पर नीलिमा की माँ के न रहने से लोगों ने तरह-तरह के कुचक्र फैलाने शुरु कर दिये। बेचारी नीलिमा को इसकी कुछ खबर नहीं थी। देखें बेचारी नीलिमा इन दुष्टों के कुचक्र से कैसे बचती है ?

एक दिन गाँव के एक मुसलमान गुंडे ने उस विधवा पड़ोसिन को बुलाकर कहा, मैं तुझे बहुत सा इनाम दूँगा। अगर तुम मेरा एक काम कर दोगी।

पड़ोसिन ने कहा—क्या ?

उस गुंडे ने कहा—नीलिमा के पास मुझे पहुँचा दो।

पड़ोसिन ने चौंक कर कहा—आह! इस दुनिया मे मेरे सिवाय कोई उसका मददगार नहीं है। मुझ पर वह बहुत भरोसा रखती है। मैं ऐसा काम नहीं कर सकती।

गुंडा—(कड़क कर) देख बुढ़िया अगर तू राजी से काम कर देगी तो इनाम पावेगी और नहीं करेगी तो तेरी अच्छी तरह दुर्दशा की जावेगी। बोल, राजी है या नहीं ?

पड़ोसिन डर गई बोली—खाँ साहब, तुम तो नाहक नाराज होने लगे। मैं नीलिमा से कह दूँगी, जैसा वह कहेगी कल तुम्हें जवाब दे दूँगी।

गुंडे ने कहा—ठीक है। अगर वह राजी से मान जाये तो अच्छा है। नहीं तो हम कल पिछवाड़े छिपे रहेंगे। तुम हमको इशारा कर देना। हम कई आदमी एक साथ टूट पड़ेंगे और मुँह बाँधकर उठा ले जावेंगे। देखो काम चुपके से हो जाये। किसी को मालूम न पड़े।

पड़ोसिन—मैं ऐसा करूँगी।

पड़ोसिन बड़े सोच में पड़ गई। हाय, बेचारी नीलिमा मुझ पर कितना विश्वास करती है। बेचारी मुझे अपनी माँ

के समान समझती है। जब उसे अपनी माँ की याद आती है तब किस तरह मेरी गोद में मुँह छिपाकर रोती है। अगर कोई देखे तो देखने वाले का कैसा ही पत्थर का कलेजा क्यों न हो, उसके भी आँसू आ जायें। बेचारी ने बाप का कुछ सुख नहीं देखा। गरीबी में पली। माँ थी, वह भी मर गई। हाय, अब नीलिमा का रूप ही उसका दुश्मन हुआ जा रहा है। अब मैं क्या करूँ? अगर उस बदमाश का कहना नहीं मानती तो वह शैतान का बच्चा मेरी इज्जत आबरू बिगाड़ देगा। अगर कहना मानती हूँ नीलिमा के साथ विश्वासघात करती हूँ। इससे तो मैं नीलिमा से साफ-साफ कह दूँगी। शायद उसे अपने बचने का कोई उपाय सूझ जाय। इस तरह सोचती बुढ़िया रात को नीलिमा के पास सोने गई।

नीलिमा—दादी, आज तुम बहुत सुस्त हो। क्या बात है? मुझे बताओ न!

पड़ोसिन—क्या बताऊँ बेटी, तुम क्या करोगी सुनकर। बहुत बुरी खबर है।

नीलिमा—(उतावली से) क्या बात है दादी! जल्दी बताओ मेरा तो बड़ा दिल घबड़ा रहा है।

पड़ोसिन—सुनो बेटी, घबड़ाने से काम नहीं चलेगा। देखो नीलिमा अब तुम सयानी हुई बेटी! तुम्हारे माँ-बाप नहीं, तुम्हें अब खुद ही सोच समझ कर चलना चाहिए। बेटी, तुम्हारा रूप यौवन ही तुम्हारा दुश्मन हुआ चाहता है।

नीलिमा—साफ साफ बताओ काकी, बात क्या है? मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

पड़ोसिन—बात यह है कि गाँव के खाँ साहब की बुरी निगाह तुम पर पड़ चुकी है। उन्होंने आज मुझे बुलाकर कहा कि नीलिमा के घर मुझे पहुँचा दो। जब मैंने नहीं की तो मार डालने की धमकी दी। बेटी, तुम खुद समझदार हो। खाँ साहब बड़ा जालिम आदमी है। उससे बड़े-बड़े गाँव के आदमी डरते हैं। हम तुम तो अनाथ ठहरी। बताओ क्या करोगी बेटी?

नीलिमा सुनकर काँप उठी। बड़ी देर के बाद उसे होश आया। उसे क्षण-क्षण भार स्वरूप दिखाई देने लगा। वह तो सुरेश बाबू से सिवाय और किसी को नहीं जानती है। उसका जीवन सुरेश बाबू के लिये अर्पण है। हाय, सुरेश बाबू, तुम बेचारी नीलिमा को सुख की झलक दिखाकर कहाँ चले गये? इससे तो तुम उसके बीच न आते तो अच्छा था। बेचारी दुखिया न सुख की उम्मीद करती न दुख होता।

नीलिमा जमीन पर पड़ी हुई रोने लगी। वह फूट-फूट कर रोने लगी। कौन उसके सतीत्व की रक्षा करेगा? किससे वह अपनी दुख की कहानी सुनावे। एक मा का सहारा था वह भी भाग्य से नहीं। हाय! आज मा होती तो क्यो उसे इतना दुख होता। हाय, सुरेश बाबू तुमने भी कोई खबर नहीं ली। किस दोष से तुमने उसे छोड़ दिया। सुरेश बाबू तुम कहाँ हो?

आकर अपनी नीलिमा की दशा देखो। तुम उसे रानी बनाने को कह गये थे। कहाँ वह अनाथों की तरह फूट फूट कर रो रही है।

नीलिमा बहुत देर तक रोती रही। बुढ़िया सो गई थी। पर नीलिमा को नींद नहीं आई। वह सोचने लगी क्या करना चाहिए। कहाँ जाऊँ? किस तरह अपनी रक्षा करूँ। बहुत सोचने पर उसे यही उपाय सूझ पड़ा, घर छोड़कर कहीं चली जाय। पर कहाँ जाय? इस रूप यौवन को लेकर जहाँ जायगी वहीं गुन्डे बदमाश उसकी तरफ घूर-घूर कर देखेंगे। किस तरह वह यह सब सहन करेगी? पर बिना जाये भी काम नहीं चलेगा। कल ही खाँ साहब अपने आदमियों को लेकर आ जावेगा और मुझे उठा ले जायगा। तब मेरी कौन रक्षा करेगा? नीलिमा बहुत देर तक जमीन पर पड़ी-पड़ी रोती रही। फिर प्रेम से एक बार घर के चारों तरफ देखकर खूब रोई। हाय, जिस जगह मेरा लालन-पालन हुआ। जिस देश में उसकी आशाएँ बड़ी हुई, वहीं पर उसका जीवन वसन्त तुषार से नष्ट हो गया। आज उसी देश को नीलिमा छोड़कर जा रही है। आज वह जन्म-भूमि को छोड़ रही है। किस लिए? अत्याचारों के कारण। नीलिमा ने एक बार प्रेम से गाँव की ओर देखा। नैनों में पानी भर आया। नीलिमा उठी एक बार बुढ़िया की तरफ देखा। बुढ़िया नींद में पड़ी सो रही थी। 'हाँ, इस बुढ़िया ने कितना मेरा साथ दिया। मैं इसका कुछ

भी भला न कर सकी। नीलिमा ने धीरे से घर का दरवाजा खोला और अँधेरे मे विलीन हो गई।

सवेरे बुढिया उठी। ऐ ! यह क्या ? क्या सचमुच नीलिमा नहीं है ? नही ऐसा नही हो सकता। हो क्यो नही सकता नीलिमा नही है। बुढिया ने बहुत ढूँढा, परन्तु वह कहाँ ? उसके लिये बुढिया दरवाजे दरवाजे फिरी। जब कही पता न लगा तब निराश हो घर लौट आई।



नीलिमा बराबर बढी चली जा रही है। वह कहा जायगी ? उसके लिए कोई ठिकाना नही। इस जगत मे कोई उसका नही है। वह अपनी चिन्ता मे लगी बराबर बढी चली जा रही है। रात में क्षण क्षण में उसका हृदय कम्पित हो जाता है। कभी-कभी जगली पशु बोल उठते है तो भी वह बढी चली जा रही है।

मरने से जिसे डर नही। जीवन मे जिसका कोई लक्ष्य नही है। प्राण उसके भार स्वरूप हो रहे हैं। उसके लिए डर कोई चीज नही है। कहाँ नीलिमा जरा अँधेरे मे खटका होता तो अपनी मा की गोद मे मुँह छिपा लेती। वही नीलिमा ऐसी अँधेरी रात म अकेली चली जा रही है।

चलते-चलते नीलिमा थक गई। रात में डर से वह कहीं नही बैठी। अब सवेरा होते देख एक पेड के नीचे बैठ गई।

वह बैठकर सोचने लगी। हाय, उसकी चिन्ता अनन्त है। उस चिन्ता की कोई थाह नहीं है। अब मैं कहाँ जाऊँ ? कहाँ जाने पर मुझे आश्रय मिलेगा, और कहाँ पर इस जले हुए दग्ध-हृदय को शीतलता प्राप्त होगी ? क्या मेरा आश्रय कहीं पर न होगा। क्या भगवान मेरी चिन्ता दूर न करेंगे ? धीरे-धूप निकल आई। बहुत देर हुई जानकर वह वहाँ से चल दी।

अब रास्ता चलने लगी। जो कोई उधर से निकलता और नीलिमा को देखता, वही उसकी तरफ देखने लगता। नीलिमा मारे शर्म के मरी जा रही थी। पर बेचारी क्या करे, कुछ सूझ नहीं पड़ता।

नीलिमा को अकेली देखकर एक आदमी ने कहा—कहो तुम इतने सवेरे कहाँ अकेली जा रही हो ?

नीलिमा डर गई। उसे बोलने का साहस नहीं हुआ। वह धीरे-धीरे जाने लगी। वह आदमी भी नीलिमा के साथ जाने लगा। थोड़ी दूर पीछे करते फिर वह आदमी बोला, तुम बोलती क्यों नहीं हो सुन्दरी ! बताओ तुम कहाँ जा रही हो ? तुम्हारा घर कहाँ है ?

नीलिमा ने डरते हुये कहा—रामपुर !

आदमी—अरे, रामपुर तो बहुत पीछे तुम छोड़ आई। मालूम पड़ता है तुम्हारे घर में झगड़ा हुआ है। तुम घर से भाग कर आई हो। चलो, हमारे साथ चलो। हम तुम्हें बहुत सुख से रक्खेंगे। भला ऐसी सुन्दरी को किस बात पर दुष्ट

ने लड़कर निकाल दिया है।

नीलिमा कुछ नहीं बोली। वह फिर भी बोलता रहा। नीलिमा ने थोड़ी दूर जाकर कुछ और भले आदमी देखे। नीलिमा ने जोर से पुकारा—बचाओ, यह दुष्ट आदमी मुझे तंग कर रहा है। रास्ते में एक भले सज्जन जा रहे थे। उन्होंने नीलिमा की पुकार सुनी और बोले—बेटी, डरो नहीं, यह आदमी तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। और डाँटकर भगा दिया। नीलिमा से कहा—बेटी, मालूम पड़ता है तुम किसी अच्छे घर की लड़की हो। अगर उचित समझो तो मेरे घर चलो।

नीलिमा ने कहा—पिता जी, मैं भाग्य की सताई हुई दुखिनी बालिका हूँ। आप मेरे पीछे कष्ट में न पड़िये।

सज्जन—बेटी, इसमें कष्ट की क्या बात है। अभी तुम बालिका हो। इस मायावी संसार का तुम्हें ज्ञान नहीं है। यहाँ पग पग पर काँटे हैं। मैं तुम्हारे भले की कह रहा हूँ।

नीलिमा—अच्छा चलो।

दोनों आकर एक विशाल मकान के दरवाजे पर खड़े हो गये। सज्जन आदमी ने पुकार कर दरवाजा खुलवाया। अन्दर से एक अधेड़ औरत ने दरवाजा खोला। साथ में एक परम रूपवती तरुणी को देखकर वह विस्मय से अपने पति की तरफ देखने लगी। पति ने अपनी पत्नी के मन के भाव समझते हुए कहा—देखो, आज मैं टहलने गया, तो देखा इस लड़की

को एक बदमाश ठग कर रहा था। मैंने किसी तरह उसे डाँट-फटकार कर भगा दिया और इसे अपने साथ ले आया हूँ। लड़की की तरह इसे रखो।

वह नीनिमा का हाथ पकड़ कर घर के भीतर ले गई और उसे नहला-धुला कर साफ कपड़े पहिनने को दिये। फिर अपने साथ बैठाकर भोजन कराया।

गृहिणी—सुबह से मुझे इतनी फुरसत नहीं मिली कि मैं तुमसे कुछ तुम्हारा हाल पूछती। बताओ तुम कौन हो, और क्यों घर छोड़कर चली आई हो?

नीलिमा ने जब गृहिणी के प्रेम भरे वचन सुने तो उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। गृहिणी ने प्रेम से आँसू पोंछ दिये और कहा—रोओ मत बेटी, संसार में दुःख सुख साथ चलता है। नीलिमा ने अपना सारा हाल गृहिणी से कह दिया। वह भी नीलिमा का हाल सुनकर दुःखी हुई।

आज कमला देवी के घर में विशेष हलचल मची हुई है। कारण कि उनका पुत्र वसन्त छुट्टियों पर घर आ रहा है। शाम की गाड़ी से वसन्त घर आया। माता-पिता से मिलकर जब वसन्त ऊपर जाने लगा तभी उसने देखा, बीच वाले कमरे में एक परम सुन्दरी रूपवती स्त्री बैठी है। वसन्त ने कभी अपनी माँ के सिवाय दूसरी औरत को घर में नहीं देखा था। वह सोचने लगा यह कौन है?

खाना खाते समय वसन्त ने अपनी माँ से पूछा—यह

कौन हैं माँ ?

कमला—यह बेचारी एक गरीब घर की लड़की है। तुम्हारे पिता जी सुबह टहलने जाते हैं। एक दिन जब वह टहलने गये तब इसके पीछे गुण्डे पड़े हुये थे। इसने अपनी रक्षा के लिये शोर मचाया। शोर सुनकर तुम्हारे पिता ने इसकी रक्षा की और अपने घर ले आये।

वसन्त—इनका नाम क्या है, माँ ?

कमला—नीलिमा।

'नीलिमा"। कितना अच्छा नाम है। वसन्त से कुछ नहीं खाया गया। वह नीलिमा के रूप की मन ही मन आलोचना करने लगा। उसने माँ की पूरी बात भी नहीं सुनी और उठ खड़ा हुआ।

'नीलिमा"।

नीलिमा अपना नाम सुनकर चौंक पड़ी और बुलाने वाले की ओर देखा तो वसन्त को अपने पीछे खड़ा पाया। पूछा—क्यों भैया क्या बात है ?

वसन्त—नीलिमा, मैं जब से आया हूँ, मैंने तुम्हें कभी हँसते नहीं देखा। क्या बात है। तुम मुझसे दूर-दूर रहती हो। नीलिमा, मैं तुमसे बातें करने को तरसता हूँ। तुम अब तक कहाँ थीं ?

नीलिमा—भैया, मैं तो यहीं तो थी। क्या कुछ काम है ?

वसन्त—हाँ नीलिमा, तुमसे बहुत जरूरी काम है। आज तुमसे मुझे कई जरूरी बातें करनी हैं।

नीलिमा का मन आशंका से कौंप उठा। उसने सोचा क्या कोई अप्रिय बात सुनने को मिलेगी?

फिर कड़ा दिल करके बोली—कहो क्या कहना है?

वसन्त—नीलिमा, जब से मैंने तुम्हें देखा है, मेरा मन मेरे वश में नहीं। मैं रात दिन यही सोचता हूं कि तुमसे कहूँ या न कहूँ। नीलिमा, मेरा जीना मरना तुम्हारे हाथ में है। न मुझसे खाया जाता है न रात में नींद ही आती है।

नीलिमा—भैया, यह बात तुम्हें शोभा नहीं देती।

वसन्त—मैं क्या करूँ नीलिमा, अपने मन को बहुत रोकता हूँ, पर विवश हूं।

इतने में कमला देवी ने नीलिमा को आवाज दी। नीलिमा नीचे चली गई। नीलिमा ने वसन्त की बातचीत किसी को नहीं बताई। रात को जब नीलिमा सोने गई, तब खूब रोई। हा, जहाँ मैं जाती हूँ वहीं मेरे भाग्य में एक न एक आफत ही बँधी है। हे भगवान, मेरे दुःखों का कब अन्त होगा?

सुबह सारे घर में कमला देवी ढूँढ आई पर कहीं नीलिमा का पता नहीं लगा। उसने सभी से पूछा, कोई नीलिमा का सच्चा हाल न बता सका। भला बताता कौन? नीलिमा ने किसी से कुछ कहा भी तो नहीं था।

वसन्त को जब मालूम हुआ कि घर से नीलिमा चली गई,

तब उसे बहुत दुख हुआ। मेरे ही कारण नीलिमा को घर छोड़ना पड़ा। इस दुख और गलती से वसन्त दूसरे ही दिन पढ़ने चला गया।

८

दोपहर का समय हो गया था। धूप भी खूब तेज पड़ रही थी। नीलिमा का मुख प्यास से सूख गया। थोड़ी दूर पर एक गाँव दिखाई दिया। तब जरा उसके प्राणों को आशा का सचार हुआ। बड़े कष्ट से उसने रास्ता तय किया। सामने एक बड़ा-सा मकान दिखाई दिया। मकान के दरवाजे पर पहुँच कर उसने एक स्त्री से पूछा—यह किसका मकान है?

स्त्री—एक ब्राह्मण का। तुम कौन हो?

नीलिमा—मैं एक विपत्त की मारी दुखी बालिका हू।

स्त्री—कहाँ जाओगी?

नीलिमा—बहिन, कहाँ जाऊँगी। मेरा कोई ठिकाना नहीं है। मैं बहुत थक गई हूँ। थोड़ी देर यहाँ पर सुस्ता लेने का विचार है।

स्त्री ने फिर कुछ नहीं पूछा और चली गई। नीलिमा दरवाजे पर इस आशा से खड़ी रही कि कोई इस मकान में से निकले। पर जब कोई बाहर आता न दिखाई दिया तब आवाज दी—मकान में कोई है?

भीतर से एक युवक ने बाहर आकरपूछा—तुम कौन हो, किसे पूछ रही हो ?

नीलिमा ने दीनता से कहा—मैं किसी की तलाश मे नही हूँ।

युवक ने चिल्ला कर कहा—तो क्या चाहती है ?

नीलिमा की आँखों मे जल भर आया। किस तरह से दूसरे से मागकर भोजन मिलता है। यह वह नहीं जानती थी। लेकिन भूख की सताई हुई नीलिमा ने कहा—मैं बडी दुखी हूँ।

युवक—बैठो-बैठो। क्या बात है ?

नीलिमा का कण्ठ भर आया। वह मन ही मन कहने लगी हाय, पृथ्वी माता तू अब भी नहीं फटती कि मै तेरे मे समा जाऊँ। और कितनी यन्त्रणाएँ सहनी पडेंगी माँ!.

नीलिमा को बोलता न देखकर युवक लौट कर जाने लगा। यह देख नीलिमा ने कहा—जाइये नही। एक बात सुनिये।

युवक—कहो, क्या कहना चाहती हो ?

नीलिमा—क्या यह ब्राह्मण का मकान है ?

युवक—हाँ। क्यों ?

नीलिमा—मुझे बहुत भूख लगी है। आज दो दिन से कुछ खाया-पिया नही है। कृपा करके मुझे कुछ खाने को दीजिए।

युवक—हमारे यहाँ तो रसोई उठ गई।

नीलिमा—कृपा कर कुछ और ही दे दीजिये।

युवक—(डॉट कर) चल चल। यहाँ कुछ भी नही है। सामने हलवाई की दूकान है, वहाँ से माँग ले।

नीलिमा—पर मेरे पास एक पैसा भी नहीं है।

युवक—तो मैं इसके लिए क्या करूँ ?

नीलिमा अब की बार बहुत ही नम्रता से बोली—मैं भूख से बहुत ही कमजोर हो गई हूँ। मुझसे एक पग भी नहीं चला जाता। आप बडे आदमी हैं। कृपा करके मुझे कुछ खाने को दीजिए।

युवक यह सुनकर भीतर चला गया। नीलिमा ने सोचा यह मेरे लिए कुछ खाना लेने गया है। थोडी देर बाद वह लौट आया। नीलिम को खडा देखकर युवक ने कहा—चलो यहाँ से चलो। यहाँ पर कुछ नहीं है। यह सुन वह निराश होकर चली गई। नीलिमा ने फिर कही जाने का इरादा नहीं किया। वह बडा मकान देखकर इस आशा से आई थी कि यहाँ पर कुछ न कुछ मिल जायगा। जब उसकी इच्छा यहाँ पूरी न हुई, तो अब दूसरी जगह जाकर क्या करे ? वह एक वृक्ष के नीचे जाकर लेट रही। उसके नेत्रो से अश्रुधारा बराबर जारी थी। अब वह क्या करे। कहाँ जाये। कैसे उसकी क्षुधा दूर होगी ? हाय ! इस जगत मे गरीबों का कोई भी साथी नहीं है।

भूख से, प्यास से, शोक से, मोह से उसका सारा शरीर अब सन्न हो गया था। सोचते-सोचते उसे नींद आ गई। कुछ देर बाद नींद टूटी। उसने देखा दिन डूब रहा है। सूर्य देव अस्ताचल को जा रहे हैं। नीलिमा वहाँ ठहरना उचित न समझ कर चल दी। रास्ते में एक सन्यासिनी जा रही थी।

को एक-एक सीधा और चार आने पैसे मिलेंगे। इस लाभ को सन्यासिनी न छोड सकी। उसने नीलिमा से कहा—चलो बेटी, भिक्षा मॉगने चले।

नीलिमा—मॉं, तुम भिक्षा मॉग लाओ। अभी घर का काम करना है।

सन्यासिनी—चलो बेटी, घर का काम फिर कर लेना। आज किसी रईस के घर शादी है। वहॉं पर सब को एक सीधा और चार आने पैसे मिलेगे। अगर हम तुम दोनो जायेंगे तो दोनो को पैसे मिल जायेंगे। तीन चार दिन काम चल जावेगा।

नीलिमा—यहॉं से कितनी दूर है?

सन्यासिनी—दो कोस के करीब है।

नीलिमा की बिल्कुल इच्छा न थी कि विवाह की भीड़-भाड होगी। बहुत से आदमियो का समागम होगा। ऐसे में मेरा जाना ठीक नही है। इस लिए उसने घर के काम का बहाना लगाया था। पर सन्यासिनी ने जब सीधा और चार आने पैसे की बात कही तब वह चुप हो गई। हा, यह पापी पेट जो भरना है। यह बेचारी मुझे दोनों समय ला-ला कर खिलाती है। अगर नहीं जाऊँगी तो कैसे काम चलेगा? मुझे जाना ही पडेगा। पेट भरने के लिए मनुष्य को सब कुछ करना पडता है। दोनों चल दीं।

थोडी देर में दोनो उस रईस के दरवाजे पर पहुँच गई। विवाह की बडी धूम धाम थी। बहुत भीड थी। कोई किसी

६

करीब छः महीने बीत चुके हैं, नीलिमा को सन्यासिनी के साथ रहते। सन्यासिनी नीलिमा को बडे प्रेम से रखती है। नीलिमा भी माँ के समान उसकी सेवा करती है। उसकी सेवा शुश्रषा करती है। नीलिमा की भक्ति और सेवा देखकर सन्यासिनी उसे और प्यार करने लगी।

सन्यासिनी भिक्षा माँग कर लाती थी। अब नीलिमा के आने से एक की भिक्षा द्वारा काम नहीं चलता। इस लिए सन्यासिनी मजबूर होकर नीलिमा को साथ ले जाना पडता। अब सन्यासिनी के साथ नीलिमा को देखकर लोग उसे भिक्षा बडी आसानी से दे देते। भिक्षा तो ज्यादा मिलने लगी थी पर सन्यासिनी ने सोचा, भिक्षा का ज्यादा मिलने का कारण नीलिमा का रूप है। कहीं ऐसा न हो कि और कोई आफत आ जावे।

नीलिमा का रूप यौवन ऐसे कष्ट में भी खूब निखर रहा था। उसका गोल मुख, गुलाब के फूल के समान रंग और हिरन की सी बडी-बडी आँखें सुन्दरता को दुगुना बढा रहीं थी। चलते पर उसके बाल कमर तक लटकते थे। पतली कमर और छरहरा बदन नीलिमा की सुन्दरता में चार चाँद लगा रहे थे।

को एक-एक सीधा और चार आने पैसे मिलेंगे। इस लाभ को सन्यासिनी न छोड सकी। उसने नीलिमा से कहा—चलो बेटी, भिक्षा माँगने चलें।

नीलिमा—माँ, तुम भिक्षा माँग लाओ। अभी घर का काम करना है।

सन्यासिनी—चलो बेटी, घर का काम फिर कर लेना। आज किसी रईस के घर शादी है। वहाँ पर सब को एक सीधा और चार आने पैसे मिलेगे। अगर हम तुम दोनों जायेंगे तो दोनो को पैसे मिल जायेंगे। तीन चार दिन काम चल जावेगा।

नीलिमा—यहाँ से कितनी दूर है?

सन्यासिनी—दो कोस के करीब है।

नीलिमा की बिल्कुल इच्छा न थी कि विवाह की भीड-भाड होगी। बहुत से आदमियो का समागम होगा। ऐसे में मेरा जाना ठीक नहीं है। इस लिए उसने घर के काम का बहाना लगाया था। पर सन्यासिनी ने जब सीधा और चार आने पैसे की बात कही तब वह चुप हो गई। हा, यह पापी पेट जो भरना है। यह बेचारी मुझे दोनो समय ला-ला कर खिलाती है। अगर नहीं जाऊँगी तो कैसे काम चलेगा? मुझे जाना ही पडेगा। पेट भरने के लिए मनुष्य को सब कुछ करना पडता है। दोनो चल दीं।

थोडी देर में दोनों उस रईस के दरवाजे पर पहुँच गई। विवाह की बडी धूम धाम थी। बहुत भीड थी। कोई किसी

को नहीं सुनता था। बहुत से भिखारी और लूले-लगडे, गरीब, अनाथ दरवाजे पर डटे थे। वह दोनो भी एक तरफ खडी हो गई। नीलिमा को बडी शर्म मालूम हो रही थी। उस बेचारी ने कभी भिक्षा नही मांगी थी। उसे इस तरह खडे रहना बहुत ही बुरा लगा। पर क्या करती मजबूर थी। दरवाजे पर भीख बँट रही थी। एक के बाद दूसरे को भीख मिल रही थी। नीलिमा भी भीख लेने आगे बढी। आह! ईश्वर की विचित्र गति है! द्वार पर उसकी नजर गई—बस, फिर भिक्षा न ले सकी। उसका सर्वाङ्ग कॉंप उठा। मुँह लाल हो गया और सारे शरीर मे पसीना हो गया। वह भिक्षा न ले सकी। जल्दी से बाहर निकल आई।

वह एक मैली चादर ओढे हुए थी इसलिए द्वार पर उसे कोई न पहचान सका। जिसे देखकर वह भिक्षा न ले सकी, और बाहर निकल पडी, जिसे देखकर नीलिमा का मुखमण्डल लज्जा से लाल हो गया। नयनो मे पानी भर आया। वह भिक्षा देने वाले सुरेश बाबू ही थे। यह घर उनके रिश्तेदार का है। वह न्योते में आये हैं।

नीलिमा बाहर जाकर खडी हो गई। एकटक सुरेश बाबू की तरफ देखने लगी। उसके हृदय में जो आग राख से ढकी थी, वह आज फिर जल उठी। आह! प्यारे सुरेश बाबू आज मैं अनाथिनी हूँ। हाय, प्यारे एक बार मेरी ओर देखो! आज मेरी क्या दशा हो रही है! तुम्हे मैं हृदय से अपना उपास्य

देव मानती हूँ। तुम्हीं मेरे सर्वस्व हो। मुझे क्या तुम एकदम ही भूल गये? नाथ, हृदयेश्वर, किस तरह मुझे भूल गये। मैं तो तुम्हारे सिवाय किसी को नहीं जानती। नीलिमा ने सोचा, कि सुरेश बाबू के चरणों पर गिर कर एक बार अपनी दुख की कहानी सुनाऊँ। फिर सोचा मैं तो दुखिनी हूँ ही, क्यों अपने साथ अपने जीवन-सर्वस्व को दुखी बनाऊँ। आज मैंने अपने हृदयेश्वर को देख लिया, जिसके लिए इतने दिनों से आँखें तरस रही थी। अब मैं सुख पूर्वक मर सकूँगी। आज मेरा सौभाग्य है तभी तो सुरेश बाबू के दर्शन मिले। फिर कभी देख सकूँगी। ऐसी आशा मुझे कदापि न थी। नीलिमा बड़ी देर तक सुरेश बाबू को प्रेम से देखती रही। उसे बाहरी दुनिया का कुछ ख्याल न रहा।

एक बार सन्यासिनी के पुकारने से उसे होश हुआ। नीलिमा चौंक पड़ी। सारा शरीर पसीने से तर हो गया। भर्राये गले से बोली—माँ, क्या कहती हो?

सन्यासिनी—क्या तू भिक्षा ले आई?

नीलिमा—नहीं।

सन्यासिनी—क्यों?

नीलिमा—मुझे धक्का देकर बाहर निकाल दिया। भीख नहीं दी।

सन्यासिनी—सब को मिली, तुझे नहीं मिली?

नीलिमा—क्या करूँ। भाग्य!

सन्यासिनी—(नाराज होकर) तुझे माँगना भी नहीं आता। खैर, चलो घर चले।

नीलिमा ने सोचा, सुरेश बाबू के दर्शनो को छोडकर कैसे घर जाऊँ। प्राणनाथ! क्या तुम्हे छोडकर चली जाऊँ? एक बार सोचा, नहीं जाऊँगी। जब तक होगा यही खडी खडी उन्हें देखती रहूँगी। सुरेश बाबू के देखने से ज्यादा सुख और जगत् मे कौन सा है? जब वह चले जायेंगे तब मै भी चली जाऊँगी। लेकिन सन्यासिनी को कैसे छोड सकती हूँ? एक बार छोड देने से मेरी क्या दशा होगी? न जाने फिर कितने सकट सहने पडेंगे। इस लिए जाना ही ठीक समझा। एक बार प्रेम-दृष्टि से सुरेश बाबू को देख नीलिमा सन्यासिनी के साथ चल दी।

रास्ते मे चलते चलते सन्यासिनी की निगाह बचा कर फिर-फिर कर देखती जाती थी। उसका हृदय शोक से व्याकुल हो रहा था। आँखो मे पानी भर आया था। हाय, जिसे देखने के लिए इतने दिनो से आँखें तरस रही थीं वह आज मिला भी तो कैसे समय! रास्ते भर नीलिमा चुपचाप रोती रही। ठीक दोपहर को वह दोनो घर पहुँची।

१०

नीलिमा को सन्यासिनी के साथ रहते एक साल के लगभग हो गया। किसी तरह बेचारी दिन काट रही है। अनाथिनी जरा सा सहारा पाकर उसी दशा में अपने दिन व्यतीत करने लगी। पर भाग्य को कौन जानता है। क्या मालूम नीलिमा की यह दशा भी रहेगी या नहीं ?

जिस दिन नीलिमा और सन्यासिनी दोनों भीख माँगने गई थी, सन्यासिनी तो भीख लेने चली गई। पर नीलिमा सुरेश बाबू के प्रेम मे दीवाना थी। उसे जरा भी ध्यान न था कि मेरे मुख की चादर हट गई है। वह एकटक सुरेश बाबू की तरफ देख रही थी, उसी समय एक युवक की निगाह उस पर पडी। वह उसकी सुन्दरता पर मोहित हो गया। वह सोचने लगा, क्या भिखारियों में भी ऐसी सुन्दरता होती है ?

जब नीलिमा और सन्यासनी दोनो घर की तरफ जा रही थीं। वह भी पीछे पीछे आ कर उसका घर देख गया। दूसरे दिन जब सन्यासिनी भीख माँगने निकली तो उसने रास्ते मे उसे रोक कर कहा—तुम्हारे साथ कल जो लडकी थी वह तुम्हारी कौन है ?

सन्यासिनी—(झिझक कर) होगी, तुम्हें मतलब। तुम अपना काम करो ?

युवक—मुझे उससे मिला दो। जब से मैंने उसे देखा है,

मुझे चैन नहीं। मैं तुम्हारी खोज में था।

सन्यासिनी के पास नीलिमा को रहते एक वर्ष हो गया था। सन्यासिनी अब नीलिमा को और भी ज्यादा चाहने लगी थी। उसे यह बात सुनकर क्रोध आ गया। बोली—तुम्हें शर्म नहीं आती। पराई बहू-बेटी को बुरी नजर से देखते हो। भगवान ने तुम्हें पैसा दिया है। तुम्हारे लिए किस बात की कमी है। जाओ, हट जाओ, मेरे सामने से। अब ऐसा साहस न करना।

युवक—मैं तुम्हें निहाल कर दूँगा। भविष्य में तुम भीख मागने की झंझट से छूट जाओगी। तुम्हारी जिन्दगी सुख से बीतेगी।

सन्यासिनी—मुझे सुख से जिन्दगी नहीं काटनी है। अगर मेरे कर्मों में सुख ही लिखा होता क्यों सन्यास लेती ?

युवक ने सन्यासिनी का तरह तरह के प्रलोभन किया। अन्त में सन्यासिनी ने कहा—अच्छा मैं उससे पूछकर कल तुम्हें जवाब दूँगी।

युवक ने एक गिन्नी देकर कहा—लो, यह तुम्हारा मेहनताना है। काम हो जाने पर इनाम मिलेगा।

सन्यासिनी को ऐसा मालूम पड़ा जैसे किसी ने उसके हाथ पर अँगारा रख दिया। पर समय उचित न जानकर चुप हो रही।

सन्यासिनी ने घर आकर सब बातें नीलिमा से कह दीं। नीलिमा सुनकर चौंक पड़ी। उसने कहा—मैं तुम्हारी सब

बातें मानने को तैयार हूँ। पर यह बात नही मानूँगी। मैं अपना सतीत्व भग नही कर सकती। तुम्हें इस बारे में कहने का कोई अधिकार नहीं हैं।

सन्यासिनी—इससे तुम्हारा दु ख दूर हो जायगा।

नीलिमा रो उठी। उसका हृदय भर आया। रोते रोते उसने कहा—नही, क्षमा करो। मेरा इस ससार मे कोई नही है। तुम धर्म की माँ हो, तुम्हारे बिना मेरी कौन रक्षा करेगा।

सन्यासिनी चुप रही। नीलिमा की दुखमय बातें सुनकर उसे बहुत दु ख हुआ। लेकिन वह अपने मन का भाव छिपाये रही।

शाम के पहिले सन्यासिनी ने उस पापी से सब बाते कह दी कि नीलिमा राजी नहीं है। 'राजी नही है'—सुनकर उसके सिर पर मानो वज्राघात हुआ। मनुष्य रूप देखकर उन्मत्त हो जाता है। उसने कहा—जैसे भी हो, तुम्हे मेरा काम करना होगा। जो तुम कहो मै करने को तैयार हूँ।

सन्यासिनी—मेरी समझ मे नीलिमा ऐसे तुम्हारे वश मे नहीं आवेगी। तुम नीलिमा के लिए कोई अच्छा-सा जेवर बनवा लाओ। औरतें जेवरो पर ज्यादा मरती हैं। शायद उसके लोभ में आ जावे?

युवक—जेवर बनने मे चार-पाँच दिन लग जावेगा।

सन्यासिनी—तो क्या हुआ। मुझे आशा है जब तक मे मैं उसे ठीक रास्ते पर ले आऊँगी।

युवक ने सन्यासिनी की बात मान ली। वह चला गया।

सन्यासिनी ने नीलिमा को बुलाकर कहा—बेटी, अगर तुम उसका कहना नहीं मानोगी, तो वह पापी तुमसे बलात्कार करेगा, तो तुम्हारी रक्षा कौन करेगा ? हम गरीबों को मदद भी तो कोई नही देता, जो मेहनत मजदूरी ही करके पेट भर लें।

नीलिमा—माँ, तुम पेट भरने की कोई चिन्ता न करो। हम परिश्रम करके पट भरेंगे।

सन्यासिनी—पर तुम्हारी जिन्दगी कैसे कटेगी। अभी तो तुम लडकी हो, बेटी ! शायद तुम्हारी शादी भी नही हुई है। आखिर तुम कहना मान क्यों नही लेती ?

नीलिमा शादी की बात सुनते रो पडी। सन्यासिनी ने पूछा—क्या बात है बेटी ! तुम कल से इतनी दुखी क्यो हो ?

नीलिमा ने अपना सारा हाल अपनी माँ से लेकर कल सुरेश बाबू के मिलने तक का उस सन्यासिनी को बता दिया। कि वह सुबक सुबक कर रोने लगी।

सन्यासिनी—यह तो मैं भी समझ गई थी कि तुम कोई अच्छे घर की लडकी हो। पर तुमने मुझे कल क्यों नही बता दिया। मै सुरेश बाबू से मिलकर तुम्हारा सारा हाल कह देती। शायद तुम्हारी इस दशा पर उन्हें तरस आ जाता।

नीलिमा—उनका कोई दोष नहीं है, माँ। वह तो बहुत सीधे और सरल हैं। यह तो मेरे भाग्य का दोप है।

सन्यासिनी—अच्छा, कल जाकर तलाश करूँगी। अगर

सुरेश बाबू मुझे मिल गये तो उनसे सारी बातें कह दूँगी। देखें उनका क्या इरादा है ?

फिर दोनों सोने चली गईं। आज नीलिमा को नींद कहाँ ! सन्यासिनी को सोते देखकर नीलिमा धीरे-धीरे दरवाजे की तरफ बढ़ी, और दरवाजा खोल कर बाहर निकल गई। उसने धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया। नीलिमा उस अँधेरी रात में चल दी। अब वह कहाँ जाय ? यह सोचती रही, इस जगत में अब उसे आश्रय मिलेगा ? उसके नेत्रों से अश्रुधारा बह बह कर उसके गुलाबी गालों पर आने लगी।।

नीलिमा ने सोचा, अब उसका दुनिया से उठ जाना ही ठीक है। उसका जीवन निसहाय है। उसे अपनी देह भार-स्वरूप प्रतीत होने लगी। इस संसार में अच्छे लोग भी हैं, बुरे भी हैं। परन्तु इस दुखदाई रूप को जहां लेकर जाऊँगी, वहीं चिन्ताओं का सामना करना पड़ेगा। क्या जानूँ किस दिन किस दशा में नारी जीवन का सार अपना सतीत्व को खो बैठूँ। पहिले जन्म में न जाने कितने पाप किये थे, जो इस जन्म में भोग रही हूँ। क्या मैं फिर पाप करूँ ? रमणी से बढ़ कर और कौन सा पाप है। मैं अब मरूँगी, जरूर मरूँगी। मेरा मरना ही ठीक है। लेकिन मरूँगी किस तरह ! मेरे हृदय में प्राणनाथ की मधुर मूर्ति जो निवास कर रही है, उसे किस तरह दूर कर सकूँगी। किस तरह मौत आवेगी ? यमराज के यहाँ जाने के अनेक मार्ग हैं। लेकिन मैं किस पथ का अवलम्बन करूँ

किया जाता है वह आनन्द, वह मीठी किलकार उनके घर नहीं। न मालूम किन पापो के-फल से भगवान ने उन्हे सन्तान नही दी। यही अभाव विमल बाबू के चिन्ता का कारण है। उसी चिन्ता से वह कभी कभी बहुत परेशान हो जाते हैं। उनकी पत्नी सावित्री देवी उन्हे कई बार समझा चुकी हैं, आखिर यह धन किस काम आवेगा। अपना नही है तो क्या। कोई दत्तक पुत्र गोद क्यो नही ले लेते। पर विमल बाबू न मालूम किस सोच में पडे रहते हैं। किससे अपने मन का हाल कहते। उनकी कभी किसी ने नही सुनी।

अब विमल बाबु का मन अपने व्योपार मे कम लगता। किसके लिए हाय-हाय करें। जिसके लिए धन कमाया जाता है, वही मेरी तकदीर मे नही है तो इस धन को लेकर क्या करूँ। विमल बाबू अब नित्य गगा स्नान करने जाने लगे। किसी शिव-मदिर को देखते तो एक लोटा जल और धूप दीप नैवैद्य से पूजा करते। उनके दरवाजे से कभी कोई भिखारी खाली हाथ लौटते किसी ने नहीं देखा। पर भगवान की माया विचित्र है। इतना सब करने पर पुत्र तो क्या पुत्री का जन्म भी नहीं हुआ।

सुबह का समय है। हवा ठडी-ठडी चल रही है। चिडियाँ मधुर बोली से चहक रही हैं। विमल बाबू ने अपनी धोती अँगौछा उठाया और गगा स्नान को चले। रास्ते भर वह अपने विचारो मे लीन थे। न मालूम भगवान की क्या माया है।

हाय, अगर ईश्वर मुझे लडका नही तो लडकी ही दे देते तो मेरे मन की अभिलाषा पूरी हो जाती।

किनारे पर धोती-लोटा रख वह लहरो का उछलना कूदना फिर आपस मे मिल जाना देखते रहे। एकाएक कुछ काला-काला धब्बा गगा जी मे देखकर हिचक उठे। हैं, यह क्या ? यह तो कोई आदमी सा मालूम पड रहा है। अरे! यह तो कोई लडकी मालूम होती है। उनका जी नहीं माना। उठकर देखने लगे। मालूम पडा औरत है। उन्होने किनारे पर चारो तरफ निगाह दौडाई पर कही कोई आदमी नजर नही आया।

उन्होंने कई आवाज दी। पर किसी ने नहीं सुनी। आखिर उठकर जरा दूर पर जहाँ साधुओ की धूनी जल रही थी, गये और कहा—अरे भाई, एक स्त्री गगा मे डूब गई है। चलकर उसे बचाओ। कई साधु दौडकर गगा किनारे आये और लाश को खींच कर बाहर निकाल लिया। हैं, यह क्या ? यह तो औरत है। एक ने कहा। झट से विमल बाबू ने अपना अँगौछा उसके ऊपर डाल दिया। और उसका उपचार करने लगे।

आँख खुलने पर नीलिमा ने अपने को एक सजे सजाये कमरे में देखा। वहाँ पर नाना प्रकार की सुन्दर तस्वीरे लगी थीं। दीवारो पर सुन्दर सुन्दर महात्माओ के चित्र टँगे थे। स्थान-स्थान पर झाड फानूस कमरे की शोभा को दुगुना कर रहे थे। सजे-सजाये कमरे और गुलगुले बिस्तरे को देखकर नीलिमा को बहुत आश्चर्य हुआ। वह पलग पर पडे-पडे सोचने

लगी—यह किसका मकान है ? मैं कहाँ पर हूँ ? मैं तो गंगा में डूब गई थी। कहीं यह स्वर्ग तो नहीं है ! जहाँ मैं मर कर आ गई हूं। इन्ही विचारों में नीलिमा पडी हुई थी कि एक मीठी आवाज उसके कानों में पडी—कैसी तबीयत है, बेटी ?

नीलिमा ने देखा एक तीस पैंतीस वर्ष की स्त्री बडे प्रेम से उसको सम्बोधन करके यह बात कह रही हैं।

नीलिमा—मैं कहाँ पर हूँ ? और आप लोग कौन हैं ?

स्त्री—घबराओ नही। तुम अच्छी जगह हो। हम लोग तुम्हारे हितु हैं।

नीलिमा ने फिर आँख बन्द कर ली और अपनी अवस्था को सोचने लगी।

स्त्री चुपचाप कमरे से बाहर निकल गई। थोडी देर मे विमल बाबू और सावित्री देवी ने कमरे में प्रवेश किया। नीलिमा को अच्छी जान दोनों को बडी प्रसन्नता हुई।

विमल बाबू—अब कैसा जी है, बेटी ?

नीलिमा—ठीक है।

विमल बाबू—भगवान की अपार महिमा है। तुम बच गई बेटी, नहीं तो तुम मर ही गई थीं।

नीलिमा—आप ने मुझे बचाकर जो उपकार किया, उसके लिए मैं आप की बहुत कृतार्थ हूँ। मुझ दुखिया को बचाकर आप ने अच्छा नही किया।

विमल बाबू—क्यों, क्या बात है बेटी ?

नीलिमा इन प्रेम भरे शब्दो को सुनकर अपने को न रोक सकी। सारा वृतान्त कह सुनाया। विमल बाबू और उनकी पत्नी दोनो ध्यान से उसका वृतान्त सुनते रहे। फिर विमल बाबू ने सावित्री से कहा—भगवान ने हमें सन्तान नहीं दी थी, अब तुम नीलिमा को अपनी लडकी समझो।

नीलिमा का विमल बाबू के यहाँ बडा आदर होता। किसी बात की कमी तो थी नही। सावित्री देवी बडे प्रेम से नीलिमा को नये नये वस्त्र मँगा कर देती। और अच्छा-अच्छा खाना अपने सामने बैठाकर खिलाती। एक तो नीलिमा वैसे ही सुन्दर थी, अब अच्छे वस्त्रो और अच्छे खाने ने उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिये।

१२

किशोरी लाल को विपदाओं ने आ घेरा। जब विपत आती है तो अकेले नही आती। चारो तरफ से आती है। यह कहावत ठीक ही है।

किशोरी लाल का महल कैलाश भवन शानदार अपना सानी नहीं रखता था। इसके अतिरिक्त और गाँव, जमींदारी वगैरा थी। गगापुर मे बडी जमींदारी थी। इसके सिवाय थोड़ी-थोडी जमींदारी और बहुत जगह थी।

कुछ दिन हुए उन्होंने अपनी स्त्री के कहने से अपने साले को गगापुर के प्रबन्ध के लिए भेजा। उनका साला बिल्कुल

ही मूर्ख, अन्यायी और बदमाश था। वहाँ जाकर उसने जो बदमाशी शुरु की, उसका कोई ठिकाना नही। उसने जाते ही सारी प्रजा पर अत्याचार करने शुरु कर किये। बडे घर की बहू-बेटियो का सतीत्व भ्रष्ट करना उसके बाये हाथ का काम था। एक दिन उसने अपने नौकर से पूछा—क्यो रामा! सब ठीक है न?

रामा—सरकार, वह मुश्किल से राजी हुई है।

नायब—उसके लिए कौन सी मुश्किल बात थी। उससे क्यों न कहा कि उसकी किस्त का रुपया जमा कर लिया है। और उसके आने से अब की किस्त से भी मुक्त कर दी जावेगी।

रामा—मैंने बहुत कहा लेकिन राजी नही होती थी। जब बहुत धमकाया तो राजी हुई।

पाठको ने समझ लिया होगा कि दीवान साहब मालगुजारी वसूल करते थे। कैसा अत्याचार होता था। और वह गरीबों का सतीत्व भ्रष्ट कर अपनी काम-वासना पूरी करता था। इधर खजाना भी खाली होने लगा। आमदनी कहाँ से होती? क्योंकि बेबाक तो दूसरी ही तरह होता था। बदमाशो की भी क्या कमी थी? वे भी आ जुडे थे। मित्रता कर मुफ्त का माल उडाने लगे। पानी की तरफ रुपया उडने लगा। कौन मना करे? कोई और तो दीवान है ही नहीं। खास साला ही है। इधर यह हाल था। उधर ईश्वर की कृपा कहो या नाराजी

कहो, इतनी वर्षा हुई कि सब खेती सड़ गई। चारों तरफ महामारी फैल गई। बड़े दीवान साहब की इन पर चिट्ठी पर चिट्ठी और तकाजे पर तकाजे आने लगे कि रुपया फौरन भेजो। क्योंकि मालगुजारी का रुपया सरकार में जमा करना है। किन्तु गंगापुर से एक पाई भी नहीं आई। यहाँ के खजाने में इतना रुपया नहीं था कि मालगुजारी का रुपया सब का सब दे दिया जाता।

किशोरी लाल ने पूछा—क्यों अब कितने दिन रहे हैं ?

सिर्फ दो दिन रह गये हैं। अब क्या हो सकता है। मैं अभी गंगापुर जाता हूँ। वहाँ जाकर कुछ प्रयत्न करूँगा।

किशोरी लाल ने गंगापुर का दृश्य देखा। उससे उनका माथा ठनक गया। रुपयों की आशा बिल्कुल ही जाती रही।

दूसरे दिन वह कलकत्ता पहुँचे। एक गाड़ी करके बड़े बाजार की तरफ रवाना हुए। बड़े बाजार में उनके एक परम हितैशी मित्र रहते थे। उनका लेन-देन, काम काज बहुत फैला हुआ था। उनका रुपया उनके मित्र के पास जमा था। गाड़ी से उतर किशोरी लाल भीतर चले गये। लेकिन दरवाजा बन्द देख बड़ा आश्चर्य हुआ। उस विशाल भवन में एक भी मनुष्य नहीं। वह भवन निर्जनता से भीषण भाव धारण करके खड़ा था। यह क्या है ? उनकी छाती धड़कने लगी। सब दरवाजे बन्द थे। तब पहरेदार के मकान में गये। वहाँ पर एक आदमी से मुलाकात हुई। उस आदमी ने इनसे पूछा—

कहिये आप क्या देख रहे हैं ?

उन्होंने कहा—हम सेठ जी से मिलना चाहते हैं। क्या दूकान दूसरी जगह उठ गई है ?

युवक ने कहा—आप ने सुना नहीं ? उनका दिवाला निकल गया।

यह सुनकर किशोरी लाल की वह दशा हो गई मानो किसी ने वज्रप्रहार किया हो। कुछ देर तक उनके मुँह से कोई बोल न निकला। जब बाबू साहब कुछ न बोले तब उस युवक ने कहा—कहिये महाशय ! क्या आप कलकत्ते में नहीं रहते हैं ?

किशोरी लाल—मैं ? मैं तो बहुत दूर से आ रहा हूँ। सेठ का क्या सचमुच दिवाला निकला है। कब निकला ? महाशय !

युवक—(बड़े दुःख से) हाँ बात सच है। थोड़े दिन हुए।

किशोरी लाल को अब और कुछ पूछना नहीं रह गया। उनके आँखों के सामने अँधेरा छा गया। उन्हें चारों ओर शून्य दिखाई देने लगा। हाय, अब क्या होगा। यहीं का पूरा भरोसा था।

किशोरी लाल गाड़ी पर बैठकर मित्र के बँगले पर पहुँचे। वहाँ पर भी किसी से भेंट नहीं हुई। किशोरी लाल ने अपनी तकदीर ठोक ली। थोड़ा बहुत नहीं पूरे बीस लाख रुपये खो दिये। उनका सब धन चला गया। वह आज भिखारी हो गये। अब मकान, जमींदारी वगैरा सब बिक जायगी।



क्योंकि आज किस्त का आखिरी दिन है। उसका सिर घूम गया। दारुण चिन्ता का विषय सन्ताप सता रहा था। चिन्ता के मारे किशोरी लाल का बुरा हाल था। साथ में नौकर भी आया था। उसने कहा—अब कहाँ चलना होगा ?

कहाँ जायेंगे, इस बात का अब यह क्या जवाब देते? उनके लिए कही स्थान न रहा। उनकी सम्पत्ति, जमींदारी, मकान, स्त्री, पुत्र आज स्वजन सब एक क्षण में न जाने कहाँ चले गये। मानों उनके कोई नहीं है। आज सब की बातें भूल गई। आज उन्हें खडे होने का स्थान नहीं है। कहाँ जाएँ? उनकी आँखों मे पानी सा भर आया। रूमाल से आँखें पोछते हुये नौकर से कहा—चलो, अदालत चलना है।

फिर-फिर वही बात अदालत। किशोरी लाल का माथा घूमने लगा। उनके अन्तस्थल में मानों कोई अंकुश गड़ाने लगा। गाडी अदालत की तरफ जाने लगी। किशोरी लाल का चिन्ताओं के मारे बुरा हाल था। हृदय जलाने वाली मर्म भेदक-चिन्ता क्यों न हो। बात की बात मे बीस लाख पर पानी फिर गया। कितने परिश्रम से अर्जित किया हुआ धन देखते देखते किस जादू के बल से कहाँ उड गया? कितने कष्ट से, कितने परिश्रम से, कितनी बार मौत के मुँह में पड-पडकर यह रुपया उपार्ज्जन किया था। एक-एक याद आने लगी। दारुण चिन्ता से छाती अन्दर धँसने लगी। हाय, हाय, ऐसा क्यो? चिन्ता अकेली नहीं आती।

८ किशोरीलाल अदालत मे अपने वकील से मिलकर कलक्टरी की तरफ रवाना हुए। कलक्टरी के खजाने का आखिरी दिन है। पहिले तो कलक्टरी की तरफ गाडी रवाना हुई। लेकिन कुछ सोचकर गाडी को दूसरी तरफ ले जाने को कहा। थोडी दूर पर उनके एक रिश्तेदार रहते थे। थोडी देर में वहाँ पहुँच गये। वहाँ उनका बडा आदर-सत्कार हुआ। उन लोगो ने खाने-पीने को कहा। लेकिन किशोरी लाल ने तबीयत ठीक न होने का बहाना कर कुछ खाया-पिया नहीं और ऐसे ही भूखे सो गये।

किशोरी लाल ने सवेरे उठकर स्नानादि किया। उस समय उनकी आँखें लाल हो रही थीं। सर्वाङ्ग काँप रहा था। सब कामों से निवट कर उन लोगो से घर जाने की आज्ञा ले विदा हुये। दो दिन निराहार बीते। फिर भी कुछ न खाया और सीधे कलक्टरी की तरफ रवाना हुए। आज किशोरी लाल कलक्टरी की तरफ जा रहे हैं। उनका सर्वस्व तो कल ही नष्ट हो गया। लेकिन यह जानने के लिए कि देखें उनकी विशाल सम्पत्ति का अधिकारी कौन हुआ? थोडी देर बाद गाडी कलक्टरी पहुँची। किशोरी लाल गाडी से उतर पडे। उनके शरीर की अजब दशा थी। मानो सारे शरीर का खून सूख गया हो। उन की देह में जरा भी सामर्थ नहीं रही। उन्होंने बडी मुश्किल से कलक्टरी में प्रवेश किया।

वहाँ पर हेडक्लर्क से पूछा— .. .. नम्बर की जमींदारी

किसने खरीदी है। कृपा करके वतला दीजिये। मै आप का वडा उपकार मानूँगा।

"वडा उपकार मानूँगा" कह देने से काम नही चलता। इसलिए किशोरी लाल ने हेडक्लर्क की हथेली भी गर्म की। तव उसने कहा—आप वैठिये, मै अभी देखकर वताता हूँ।

किशोरी लाल वैठ गये। थोडी देर बाद वह एक कागज का टुकडा लेकर लौटा और किशोरी लाल को देकर कहा—इसे पढ लीजिए। इसमे सव वातें लिखी हुई हैं। इतना कह क्लर्क चला गया और किशोरी लाल उसे पढने लगे। इसके पढने से वह एकदम निराश हो गये। उनकी रही सही आशा भी मिट्टी में मिल गई। उनकी सव जमीदारी बिक गई। उसे रईस विमल कुमार ने अपनी पलिता कन्या नीलिमा के लिए खरीदा है। यदि विमल कुमार न खरीदते तो शायद किशोरी लाल कह-सुनकर छुडा लेते। लेकिन उनके साथ कई वार कहा-सुनी और तकरार हो चुकी थी। इसलिए किशोरी लाल ने उनसे कुछ कहना ठीक नहीं समझा।

किशोरी लाल निराश होकर गाडी पर वैठ स्टेशन पहुँचे। उधर ट्रेन तैयार खडी थी, टिकट लेकर दोनों गाडी में वैठ गये। गाडी मे वैठकर किशोरी लाल आकाश पाताल सोचने लगे। उनकी चिन्ता का कोई ठिकाना नहीं है। आज वे रास्ते के भिखारी हैं। उनकी सव जमींदारी बिक गई। अव क्या उपाय करना चाहिए? पहिले वे बडी शान-शौकत से रहते थे,

आज उनकी सारी शान मिट्टी में मिल गई। हाय, अब क्या करें। कहाँ जाये ? कौन ऐसे समय में उन्हे सहायता देगा ?

मेरी जमींदारी अब मेरी नही है। दूसरों की है। विमल कुमार ने खरीद लिया है। कौन विमल कुमार जो पहिले एक गरीब है। भाग्य ने पलटा लिया और सभ्य समाज मे सब से बडा और प्रतिष्टित आदमी माना जाने लगा। सब भगवान की माया है। हाँ, और वह नीलिमा कौन है ? विमल कुमार की तो कोई सन्तान नही है। ठीक ही तो है। उसने कहा भी तो था। उन्होने अपनी पालिता कन्या नीलिमा के लिए खरीदी है। किशोरी लाल का माथा घूम गया। उन्होने आँख बन्द कर ली। बहुत देर बाद बोले—क्या नीलिमा वह तो नही है जो मेरे रामपुर गाँव मे विधवा की लडकी, जिससे सुरेश बाबू का प्रेम हो गया था। मेरे दीवान ने एक दिन मुझसे कहा भी था कि उसकी माँ के मर जाने पर गाँव वालों के अत्याचार से ऊब कर उसने घर छोड दिया है। नहीं ऐसा नहीं हो सकता। कहाँ वह नीलिमा एक गरीब विधवा की कन्या, कहाँ कानपुर के रईस विमल कुमार की पालिता कन्या नीलिमा मे बहुत फर्क है।

मनुष्य जब यौवन और धन के पद मे रहता है, उसे अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं रहता। विपत्ति पडने पर मनुष्य का ज्ञान लौट आता है। वह पहिले नही समझता। यह बडे दुख की बात है।

उनके हृदय में बल नही, देह में सामर्थ नहीं। हाय, अब क्या करे । कहाँ जाये ? किस तरह मर्यादा रहेगी ?

देखते-देखते रेल गाडी स्टेशन पर खडी हो गई। दोनो स्टेशन पर उतर पडे। किशोरी लाल के बैठने की सवारी उन्हें लेने आई थी। उस पर बैठकर घर की तरफ रवाना हुए। मकान पर जाकर उन्होने सब शून्य देखा। अब मानों उनका इस ससार मे कोई नही है। वह ठाट बाट सब कहाँ गया। फिर पहिले की तरह स्थिति कैसे होगी। कहाँ से रुपया मिलेगा ? घर मे एक पैसा भी नहीं है।

-१३

धीरे-धीरे जो होना था वही हुआ। उन्होंने दीवान, नौकर-चाकर आदि सब को जवाब दे दिया। अब वे किस काम के लिए उन्हें रखते। उनके जीवन में एक युग परिवर्तन हो गया। एक दिन बडे जमींदार, रईस और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे लेकिन आज असहाय गरीब, दीन-हीन हैं। पिता की यह दशा देखकर सुरेश बाबू बहुत घबराये। वह घर से नौकरी की तलाश में निकले और बहुत कुछ घूम फिरे। परन्तु नौकरी मिलना जितना उन्होने सहज समझा था उतना सहज नहीं। सुरेश बाबू की अभी तक शादी नही हुई थी। कई एक उच्च घराने से बात-चीत चल रही थी लेकिन सुरेश बाबू किसी तरह शादी करने को तैयार नहीं होते थे पर अब तो सब खेल खतम हो गया।

किशोरी लाल की जायदाद पर दखल करने के लिए नीलिमा के आदमी आये। यथारीति देखकर मालगुजारी वसूल करने लगे। एक दिन नीलिमा के आदमी ने किशोरी लाल से आकर कहा—आपकी स्थिति इस समय ठीक नहीं है और हमारे मालिक ने यहाँ पर एक मकान बनवाना स्थिर किया है। यदि आप इतने बडे मकान मे न रहना चाहे तो बेंच दे। जो कीमत होगी दे दी जावेगी।

"कल आना तब जवाब देंगे"। यह कहकर किशोरी लाल ने उसे विदा कर दिया। उसके बाद वह सोचने लगे, इतना बडा मकान मैं इसकी मरम्मत कर सकूँगा। वैसी अवस्था अब मेरी नही है। और न कभी अब होने की आशा है। इसके बाद जब टूटने फूटने लगेगा तब मिट्टी के मोल बेचना पडेगा। अभी अगर बेच दूँ और दस-पन्द्रह हजार रुपया मिल जावे तो उससे कुछ व्यवसाय करके दिन काट सकूँगा। अगर बीस हजार मिल जावे तो एक छोटा सा मकान ले लूँगा और बाकी के रुपयो से किसी प्रकार निर्वाह का जरिया निकाल लूँगा। पहिले तो मै अमीर था, लेकिन अब तो नही रहा। अब इतना बडा मकान रखकर क्या करूँगा। एक दिन ऐसा था जब मेरी गिनती धनियो मे थी पर अब तो पैसे-पैसे से तंग हूँ। अन्त मैं उन्होंने स्थिर किया, मकान बेच देना ही ठीक है।

दूसरे दिन खरीदने वाले के आने पर उसकी कीमत उन्नीस हजार रुपये ठीक हुई। लेकिन एक शर्त पर जब तक मेरा दूसरा

मकान न तेयार हो जावेगा तब तक मैं इसी मकान में रहूँगा।

मकान खरीद लिया गया। उधर किशोरी लाल ने भी मकान बनवाना शुरु कर दिया। थोड़े दिनो मे मकान बन कर तैयार हो गया। किशोरी लाल अपने मकान मे चले गये।

कुछ दिन बाद रईस विमल कुमार के मकान मे आने की धूम मच गई। चारो तरफ प्रजागण आकर उनसे मिलने लगे। किशोरी लाल की जमींदारी और विमल कुमार की जमींदारी के लोगो के आगमन से चारो तरफ धूम मची थी।

किशोरी लाल के दीवानखाने में ही रईस विमल कुमार का दीवानखाना है। वह मनुष्यो से खचाखच भरा हुआ है। अत आँगन मे और बाहर सब जगह मनुष्य ही मनुष्य दिखाई देते हैं। कितने ही लोग आ-जा रहे हैं। उस दिन चारो तरफ से आदमी की भीड ही भीड नजर आ रही थी। मानो उस दिन कोई बडा भारी महोत्सव होने वाला है। विमल कुमार सब से समझ कर कह रहे थे कि मै तुम लोगो का जमींदार नही हूँ। तुम लोगो की जमींदार नीलिमा रानी है। मै अपनी रियासत के लोगो से भी कहता हू कि वे आज से नीलिमा रानी की प्रजा हैं। मैने सारी सम्पत्ति नीलिमा के नाम कर दी है। अब तुम लोग उन्ही की प्रजा हो। मेरी नही। धीरे-धीरे सध्या का समय आया। मनुष्यो की भीड धीरे धीरे कम होने लगी। रात्रि एक पहर बीत जाने पर कहीं उनका दीवानखाना खाली हुआ। तब विमल कुमार ने किशोरी लाल को बुलाने के लिए

अपना आदमी भेजा। खबर पाते ही किशोरी लाल आ गये। विमल कुमार ने बडे आदर से उन्हे अपने पास बिठाया और कहा—आप बहुत बुरी दशा मे हैं। इसके लिए दु ख मत कीजिए। यह तो माया चक्र है, घूमता ही रहता है। आज मेरे पास है तो कल तुम्हारे पास। यदि किसी तरह भी छोडने का उपाय होता तो मैं आप की जमींदारी लौटा देता। लेकिन अब कोई उपाय नहीं है।

किशोरी लाल ने कहा—मेरा भाग्य ही पलट गया। इससे दशा में पडा हूँ। जो हो दूसरे किसी के खरीदने से मुझे ऐसी खराब दशा मे नही पडता। फिर लौटा सकता था।

विमल कुमार—मैं इतना निर्दयी नही हूँ। क्या करूँ प्रतिज्ञा की है। प्रतिज्ञा तोडने से पाप का भागी होना पडता है।

किशोरी लाल—क्या प्रतिज्ञा को मैं सुन सकता हूँ।

विमल कुमार—मैं एक दिन गगा किनारे अपनी हीन दशा पर सोच कर रहा था। मेरा चित्त बालक की मीठी किलकार और मधुर बोली सुनने के लिए तडप रहा था। इसी सोच में मैं गगा किनारे बैठा था कि गगा मे मुझे कुछ तैरता हुआ नजर आया। देखने से मालूम हुआ कि एक औरत की लाश है। निकाल कर अनेको उपचार करने के बाद उस लाश में जान आती दिखाई दी। मैं उसे उठाकर आया।

भगवान की कृपा से वह बालिका बच गई। होश आने पर उसने जो जो कहा, उससे पाषाण हृदय भी विदीर्ण हो जाता! मेरी स्त्री ने प्रतिज्ञा की कि उसके दुःख दूर करूँगी। इसी उद्देश से मैंने सारी रियासत उसको दे डाली है। इसमें मेरी स्त्री सन्तुष्ट नहीं हुई। तब यह जमींदारी खरीद कर उसे दी है। इस पर उसका पूरा अधिकार है। जो बालिका दुःखों से ऊब कर पानी मे प्राण त्याग रही थी। उसका नाम नीलिमा है।

कौन, वही रामपुर वाली नीलिमा तो नहीं है? शायद वही हो। यह सोच कर किशोरी लाल बोले—भाई, नीलिमा के कोई रिश्तेदार भी है?

विमल कुमार—नहीं। ससार मे उसका कोई नही है।

किशोरी लाल ने फिर कुछ जवाब नहीं दिया। उन्होंने समझ लिया कि वह नीलिमा नही है। थोडी देर बाद बोले—नीलिमा रानी अब कहाँ पर रहेंगी?

विमल कुमार—इसी भवन मे। नीलिमा रानी के लिए ही यह मकान खरीदा गया है। हाँ, आपको जिस लिए बुलाया है वह कहता हूँ, सुनिये।

किशोरी लाल—कहिये।

विमल कुमार—आपकी हालत गिरी हुई है।

किशोरी लाल—हाँ।

विमल कुमार—आप नौकरी करेंगे?

अपना आदमी भेजा। खबर पाते ही किशोरी लाल आ गये। विमल कुमार ने बडे आदर से उन्हे अपने पास बिठाया और कहा—आप बहुत बुरी दशा में हैं। इसके लिए दुःख मत कीजिए। यह तो माया चक्र है, घूमता ही रहता है। आज मेरे पास है तो कल तुम्हारे पास। यदि किसी तरह भी छोडने का उपाय होता तो मैं आप की जमीदारी लौटा देता। लेकिन अब कोई उपाय नही है।

किशोरी लाल ने कहा—मेरा भाग्य ही पलट गया। इससे दशा में पडा हूँ। जो हो दूसरे किसी के खरीदने से मुझे ऐसी खराब दशा में नही पडता। फिर लौटा सकता था।

विमल कुमार—मैं इतना निर्दयी नही हूँ। क्या करूँ प्रतिज्ञा की है। प्रतिज्ञा तोडने से पाप का भागी होना पडता है।

किशोरी लाल—क्या प्रतिज्ञा को मैं सुन सकता हूँ।

विमल कुमार—मैं एक दिन गगा किनारे अपनी हीन दशा पर सोच कर रहा था। मेरा चित्त बालक की मीठी किलकार और मधुर बोली सुनने के लिए तडप रहा था। इसी सोच में मैं गगा किनारे बैठा था कि गगा में मुझे कुछ तैरता हुआ नजर आया। देखने से मालूम हुआ कि एक औरत की लाश है। निकाल कर अनेको उपचार करने के बाद उस लाश में जान आती दिखाई दी। मैं उसे उठाकर अपने घर ले आया। आप तो जानते ही हैं, मेरे कोई सन्तान नही है। मैं और मेरी पत्नी दोनो बड़े यत्न से उस बालिका की सेवा में लग गये।

भगवान की कृपा से वह बालिका बच गई। होश आने पर उसने जो जो कहा, उससे पाषाण हृदय भी विदीर्ण हो जाता। मेरी स्त्री ने प्रतिज्ञा की कि उसके दुःख दूर करूँगी। इसी उद्देश से मैंने सारी रियासत उसको दे डाली है। इसमें मेरी स्त्री सन्तुष्ट नहीं हुई। तब यह जमींदारी खरीद कर उसे दी है। इस पर उनका पूरा अधिकार है। जो बालिका दुःखो से ऊब कर पानी मे प्राण त्याग रही थी। उसका नाम नीलिमा है।

कौन, वही रामपुर वाली नीलिमा तो नही है ? शायद वही हो। यह सोच कर किशोरी लाल बोले—भाई, नीलिमा के कोई रिश्तेदार भी है ?

विमल कुमार—नहीं। ससार मे उसका कोई नही है।

किशोरी लाल ने फिर कुछ जवाब नहीं दिया। उन्होंने समझ लिया कि वह नीलिमा नही है। थोडी देर बाद बोले—नीलिमा रानी अब कहाँ पर रहेंगी ?

विमल कुमार—इसी भवन में। नीलिमा रानी के लिए ही यह मकान खरीदा गया है। हाँ, आपको जिस लिए बुलाया है वह कहता हूँ, सुनिये।

किशोरी लाल—कहिये।

विमल कुमार—आपकी हालत गिरी हुई है।

किशोरी लाल—हाँ।

विमल कुमार—आप नौकरी करेंगे ?

किशोरी लाल—इस बुढापे मे कहाँ नौकरी करूँगा।

विमल कुमार—अगर आप बाहर जाना उचित न समझें तो नीलिमा रानी के दीवान हो जायें। आप अच्छी तरह काम करेंगे। नीलिमा रानी इसे स्वीकार करेगी।

किशोरी लाल—मैं इस लायक नहीं रहा। हाँ, मेरे लडके को रख सकते हैं।

विमल कुमार—तो भी आपको ज्यादातर कई कामो को देखना सुनना पडेगा। क्योकि वह तो लडका है और रियासत का मामला!

किशोरी लाल—ठीक है।

विमल कुमार—जमानत की जरूरत पडेगी।

किशोरी लाल—मेरी हालत खराब है। कौन जमानत करेगा?

विमल कुमार—आपके लडके की जमानत आप ही दीजिए।

किशोरी लाल—ठीक है।

विमल कुमार—तो अभी लिखा-पढी कर डालिये। क्योकि सुबह घर जाना है।

किशोरी लाल ने अपने लडके की तरफ से एक प्रार्थना-पत्र लिख दिया। विमल कुमार ने उस पर हस्ताक्षर का स्वीकृत प्रदान की और कहा—सुरेश बाबू को आप कल ही से भेज दीजिये।

उस दिन कचहरी उठ गई। विमल कुमार के भोजन का



समय हुआ। तो किशोरी लाल ने कहा—तो अब मैं जाऊँ ?

विमल कुमार—हाँ, आप कल सुरेश बाबू को भेज दीजिए और समझा दीजिए काम काज अच्छी तरह से देखे ।

किशोरी लाल—नीलिमा रानी कब आवेंगी ?

विमल कुमार—पूर्णमासी के दिन आवेंगी। आप सुरेश बाबू से कह दीजिये कि उस दिन शहर के दोनो ओर कदली-वृक्ष और पुष्पों से शाभित किये जाये। और नृत्य गीत, दीन-दुखियो को भोजन कराया जाय। दोपहर की ट्रेन से नीलिमा रानी आवेगी। उस समय वहाँ पर चार-पाँच पालकियाँ रहनी चाहिए। सुसज्जित सेना और अश्वरोही और पैदल सेना उपस्थित रहे। पहिले वे इसी मकान में आवेंगी। इसलिए यहाँ पर सब प्रकार का प्रबन्ध रहे।

किशोरी लाल—सब प्रबन्ध हो जावेगा।

इसके बाद विमल कुमार ने भोजन किया और वहाँ से रवाना हुए। रात बहुत बीत गई थी। इसलिए विमल कुमार का जाना किसी को विदित न हुआ।

१४

नीलिमा के जीवन के ऊपर से घोर आफ्त टल गई। उसका जीवन कष्टमय हो गया था। उसमें कितनी बार बिजली चमकी, वज्राघात हुए, जल की धाराएँ गिरीं। लेकिन आज विषाद के बादल छट गये। उसके भाग्याकाश में सौभाग्य का

किशोरी लाल—इस बुढापे में कहाँ नौकरी करूँगा।

विमल कुमार—अगर आप बाहर जाना उचित न समझें तो नीलिमा रानी के दीवान हो जायें। आप अच्छी तरह काम करेंगे। नीलिमा रानी इसे स्वीकार करेगी।

किशोरी लाल—मैं इस लायक नहीं रहा। हाँ, मेरे लड़के को रख सकते हैं।

विमल कुमार—तो भी आपको ज्यादातर कई कामों को देखना सुनना पड़ेगा। क्योंकि वह तो लड़का है और रियासत का मामला।

किशोरी लाल—ठीक है।

विमल कुमार—जमानत की जरूरत पड़ेगी।

किशोरी लाल—मेरी हालत खराब है। कौन जमानत करेगा?

विमल कुमार—आपके लड़के की जमानत आप ही दीजिए।

किशोरी लाल—ठीक है।

विमल कुमार—तो अभी लिखा-पढ़ी कर डालिये। क्योंकि सुबह घर जाना है।

किशोरी लाल ने अपने लड़के की तरफ से एक प्रार्थना-पत्र लिख दिया। विमल कुमार ने उस पर हस्ताक्षर का स्वीकृत प्रदान की और कहा—सुरेश बाबू को आप कल ही से भेज दीजिये।

उस दिन कचहरी उठ गई। विमल कुमार के भोजन का



समय हुआ। तो किशोरी लाल ने कहा—तो अब मैं जाऊँ ?

विमल कुमार—हाँ, आप कल सुरेश बाबू को भेज दीजिए और समझा दीजिए काम काज अच्छी तरह से देखे ।

किशोरी लाल—नीलिमा रानी कब आवेंगी ?

विमल कुमार—पूर्णमासी के दिन आवेंगी। आप सुरेश बाबू से कह दीजिये कि उस दिन शहर के दोनो ओर कदली-वृक्ष और पुष्पों से शाभित किये जाये। और नृत्य गीत, दीन-दुखियों को भोजन कराया जाय। दोपहर की ट्रेन से नीलिमा रानी आवेगी। उस समय वहाँ पर चार-पाँच पालकियाँ रहनी चाहिए। सुसज्जित सेना और अश्वरोही और पैदल सेना उपस्थित रहे। पहिले वे इसी मकान में आवेंगी। इसलिए यहाँ पर सब प्रकार का प्रबन्ध रहे।

किशोरी लाल—सब प्रवन्ध हो जावेगा।

इसके बाद विमल कुमार ने भोजन किया और वहाँ से रवाना हुए। रात बहुत बीत गई थी। इसलिए विमल कुमार का जाना किसी को विदित न हुआ।

१४

नीलिमा के जीवन के ऊपर से घोर आफत टल गई। उसका जीवन कष्टमय हो गया था। उसमे कितनी बार बिजली चमकी, वज्राघात हुए, जल की धाराएँ गिरी। लेकिन आज विषाद के बादल छट गये। उसके भाग्याकाश में सौभाग्य का

किशोरी लाल—इस बुढापे मे कहाँ नौकरी करूँगा।

विमल कुमार—अगर आप बाहर जाना उचित न समझें तो नीलिमा रानी के दीवान हो जायें। आप अच्छी तरह काम करेंगे। नीलिमा रानी इसे स्वीकार करेगी।

किशोरी लाल—मै इस लायक नहीं रहा। हाँ, मेरे लडके को रख सकते हैं।

विमल कुमार—तो भी आपको ज्यादातर कई कामों को देखना सुनना पडेगा। क्योकि वह तो लडका है और रियासत का मामला।

किशोरी लाल—ठीक है।

विमल कुमार—जमानत की जरूरत पडेगी।

किशोरी लाल—मेरी हालत खराब है। कौन जमानत करेगा?

विमल कुमार—आपके लडके की जमानत आप ही दीजिए।

किशोरी लाल—ठीक है।

विमल कुमार—तो अभी लिखा-पढी कर डालिये। क्योकि सुबह घर जाना है।

किशोरी लाल ने अपने लडके की तरफ से एक प्रार्थना-पत्र लिख दिया। विमल कुमार ने उस पर हस्ताक्षर का स्वीकृत प्रदान की और कहा—सुरेश बाबू को आप कल ही से भेज दीजिये।

उस दिन कचहरी उठ गई। विमल कुमार के भोजन का

समय हुआ। तो किशोरी लाल ने कहा—तो अब मैं जाऊँ ?

विमल कुमार—हाँ, आप कल सुरेश बाबू को भेज दीजिए और समझा दीजिए काम काज अच्छी तरह से देखें।

किशोरी लाल—नीलिमा रानी कब आवेंगी ?

विमल कुमार—पूर्णमासी के दिन आवेंगी। आप सुरेश बाबू से कह दीजिये कि उस दिन शहर के दोनों ओर कदली-वृक्ष और पुष्पों से शोभित किये जायें। और नृत्य गीत, दीन-दुखियों को भोजन कराया जाय। दोपहर की ट्रेन से नीलिमा रानी आवेंगी। उस समय वहाँ पर चार-पाँच पालकियाँ रहनी चाहिए। सुसज्जित सेना और अश्वरोही और पैदल सेना उपस्थित रहे। पहिले वे इसी मकान में आवेंगी। इसलिए यहाँ पर सब प्रकार का प्रबन्ध रहे।

किशोरी लाल—सब प्रबन्ध हो जावेगा।

इसके बाद विमल कुमार ने भोजन किया और वहाँ से रवाना हुए। रात बहुत बीत गई थी। इसलिए विमल कुमार का जाना किसी को विदित न हुआ।

१४

नीलिमा के जीवन के ऊपर से घोर आफत टल गई। उसका जीवन कष्टमय हो गया था। उसमें कितनी बार बिजली चमकी, वज्राघात हुए, जल की धाराएँ गिरीं। लेकिन आज विषाद के बादल छट गये। उसके भाग्याकाश में सौभाग्य का

सूर्य उदय हुआ।

आज पूर्णमासी का दिन है। आज नीलिमा अपनी जमींदारी मे जायगी। जिन लोगो ने नीलिमा का दु ख दूर किया, सारी यन्त्रणाएँ दूर की, उन लोगो को वह कैसे छोड जायगी। उसकी आँखें आँसुओ से पूर्ण हो गई। सावित्री देवी के पास जाकर कहा—आपको छोडकर वहाँ पर कैसे रहूगी? कहना न होगा। सावित्री देवी नीलिमा को बहुत प्यार करती थीं। उसकी आँखो मे आँसू देखकर उनकी आँखों में भी आँसू आ गये। उन्हो ने बडे प्रेम से अपनी धोती के आँचल से उसके आँसू पोंछे और कहा—रोओ नही। तुमने बहुत दु ख सहे हैं। किसी तरह का सुख तुमने अभी तक नही जाना। इसलिए तुम्हारे लिए जमींदारी खरीदी है। अब तुम सुख से रहो। यही मेरी इच्छा है।

नीलिमा उन्हे प्रणाम करके पालकी पर चढी। साथ मे दास, दासियाँ, सिपाही, अश्वरोही आदि थे।

यथा समय वे लोग जाकर ट्रेन पर चढे। गाडी अविराम गति से चलने लगी। गाडी में बैठकर नीलिमा अपनी धर्म-माता के लिए बहुत दु खित होने लगी। उन्ही सब चिन्ताओ के बीच उसे सुरेश बाबू की याद आ गई। वह सब भूलकर सुरेश बाबू की मोहनी सूरत का ध्यान करने लगी। भला नीलिमा अपने इतने बडे बडे कष्टों में जिसे नहीं भुली। उसे अब सुख के समय कैसे भूल सकती है। नीलिमा के आराध्यदेव

जीवन का सहारा तो वही है।

नीलिमा का हृदय आनन्द से भर गया। वह सोचने लगी, सुना है नई जमींदारी के दीवान सुरेश बाबू हुए हैं। अगर यह बात सच है तो वहाँ जाने पर उनके दर्शन पाऊँगी। बहुत दिन बाद वह मुखारविन्द देखकर जीवन सफल करूँगी। प्रेम बहुत दिनो से हृदय में आबद्ध था। आज सागर दर्शन को दौड़ा। इसलिए हृदय आनन्द से परिपूर्ण हो उठा।

इधर ट्रेन स्टेशन पर आकर खड़ी हो गई। स्टेशन पर खूब भीड़ है। स्वागत के लिए बहुत से आदमी खड़े हैं। यही नहीं, सुरेश बाबू भी वहाँ पर मौजूद हैं। दासियों ने नीलिमा को जल्दी से उतारा। लेकिन सिर से पैर तक चादर से ढकी होने के कारण कोई न देख सका। हाँ, गुलाब से लाल रञ्जित स्थल पद्म के समान दोनो पैर अवश्य देख पडे।

नीलिमा धीरे धीरे चलकर पालकी पर बैठ गई। उसकी सखी शान्ति नीलिमा के साथ थी, और कई दासिया सवारी के साथ जा रही थी। स्टेशन के बाहर सैकडो मनुष्यों की भीड़ थी। कुछ के हाथ मे लाल पताकाएँ थी। अश्वरोही और पैदल सैनिक भी थे। वह सब आगे पीछे चलने लगे।

थोड़ी देर में पालकी मकान पर पहुँच गई। उस दिन वहाँ चारों तरफ खूब चहल पहल थी। चारो तरफ तैयारियाँ हो रही थीं। नीलिमा के आगमन का समाचार सुनकर बहुत सी औरतें उसे देखने आने लगी। चारो तरफ नीलिमा के रूप

की बड़ाई होने लगी। दरवाजे पर बाजे बजने लगे। दर्शन के लिए रास्तो पर, मकानों पर, खिडकियों में, छतों पर सब जगह मनुष्यो-स्त्रियो की भीड लग गई। अपार भीड के बीच से होती हुई पालकी मकान पर पहुँची। आज भवन चमचमा रहा था। तोरण और बन्दनवार लगी हुई थी। नीलिमा ने राजमहल में प्रवेश किया। दासी ने उसे एक पलङ्ग पर बिठाया। नीलिमा लेट गई। दासी पखा करने लगी। नीलिमा सोचने लगी, भाग्य की विचित्र गति है। एक दिन मैं तरह-तरह की आपदाओ में पडी कष्ट उठा रही थी। किसी ने मेरी बात तक न पूछी और आज मेरे दर्शन के लिए लोग तरस रहे हैं। मेरे आगमन से चारों तरफ आनन्द उत्सव मनाये जा रहे हैं। आज हर कोई मेरी सेवा के लिए तैयार है। इस ससार में दरिद्र का बन्धु कोई नहीं है। अनाथ और गरीबो को कोई दया-दृष्टि से नहीं देखता। इस ससार मे मनुष्य का आदर नही है। लक्ष्मी का आदर है। परन्तु नही, मेरी धर्म माँ भी तो इसी ससार में रहती है। उन्होंने मुझपर इतनी दया और इतना प्रेम किया। उन्होंने मुझ गरीब-पर दया कर आज राज-रानी बना दिया।

१५

इस तरह दस बारह दिन और बीत गये। गाँव मे नित्य नूतन उत्सव होने लगे। इतने सुख मिलने पर भी नीलिमा को हँसते कभी किसी ने न देखा। वह सदा उदास ही रहती है। वह सोचती है, किस तरह स्वामी से मिलना होगा। क्या उनसे सारी बातें बतला दी जावें। वह मुझे स्वीकार करेंगे या नहीं? इसी सोच में नीलिमा को अपनी माँ की याद आ गई। नीलिमा के हृदय मे पुरानी स्मृति जागृत होने लगी। रामपुर का सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, विरल प्रेम, माँ का स्नेह, माँ के कष्ट, आदि-आदि बाते नेत्रो के सम्मुख नाचने लगी।

सखी शान्ति सदा नीलिमा के साथ रहती थी। कहने को तो वह नीलिमा से छोटी थी, पर उन दोनो में सगी बहिनो का सा बर्ताव था। शान्ति ने नीलिमा के आँखो में आँसू देख लिये। जल्दी से कहा—आप रो क्यो रही हैं?

नीलिमा ने आँचल से आँसू पोछ कर कहा—नही तो, रो नहीं रही हूँ। पूर्व स्मृति मन मे उदित होने से आँखो से पानी गिर रहा है।

शान्ति—नही, आप सचमुच रो रही हैं।

नीलिमा—अच्छा रो ही रही हूँ।

शान्ति—आप के हृदय की वेदना किस तरह कम की जा सकती है?

माता जी—छि बेटी, तुम इतनी बुद्धिमती होकर विधाता के विधान को इस तरह मुक्ति और नर्क के बल पर उड़ा देना चाहती हो ? इस विषय पर बहुत कुछ कहने की जरूरत है। किसी दिन फिर तुम्हे समझाऊँगी। इस समय केवल इतना ही कहती हूँ कि विधाता ने जो व्यवस्था कर रक्खी है, उसके साथ ही मनुष्य को हिताहित का ज्ञान भी दिया है। दोनो में सामजस्य रखकर कर्तव्य का पालन किये जाओ। इससे इस लोक मे भलाई होगी ही, परलोक भी बनेगा।

नीलिमा—अच्छा आप मुझे ऐसा उपदेश दीजिए जिससे मेरे मन में शान्ति हो, मुझे अपने चरणों मे स्थान दीजिए।

माता जी—घबडाओ नही बेटी, अब तुम्हारे दुःख दूर हो गये। तुम्हारा सुहाग अचल रहेगा। माथे का सुहाग और हाथो की चूडियाँ अक्षय होगी। क्यों बेटी, उदास क्यो हो गई ? शायद सोचती होगी, यह बुढिया मुझे खुश करने के लिए ऐसा कह रही है। मुझसे रकम वसूल करने के लिए मेरी खुशामद कर रही है। न बेटी, यह बात नहीं है। यह बुढिया तुम्हारे भविष्य को आँखो से देख रही है। सब फिर पाओगी बेटी, सब फिर पाओगी—हाँ, दो दिन आगे या पीछे!

नीलिमा—आप तो सब हाल जानती हैं माता जी!

माता जी—जानती हूँ, इसी से तो कहती हूँ। सब फिर पाओगी। तुम्हारे समान सती-लक्ष्मी को क्या भगवान कभी हमेशा कष्ट में रख सकते हैं!

नीलिमा—माता जी, मैंने कौन से पाप किये थे जो इतने कष्ट उठाने पड़े।

माता जी—तूने पूर्व जन्म में जो किया उसी का फल तुझे मिला। इस जन्म में जो करेगी, अगले जन्म मे उसका फल भोग करेगी। इसी तरह कई जन्मो के पाप-पुण्य मिलकर घटते बढते रहते हैं। तुम हिन्दू की सन्तान हो। तुम्हे समझाने की जरूरत नहीं। इस जन्म मे तो तुमने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण तुम यह मानसिक कष्ट सह रही हो।

नीलिमा की आँखो से आँसुओ की धारा बहने लगी। सन्यासिनी उठकर खडी हो गई, बोली—बेटी, मैं आशीर्वाद देती हूँ। तुम्हारी मनोकामना पूरी हो, और ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि हिन्दुओ के घर घर में तेरी जैसी लडकी हो।

सन्यासिनी चली गई। नीलिमा बहुत देर तक कुछ सोचती रही। बहुत देर तक माता जी का वह शब्द उसके कानो में गूँजते रहे। 'सब कुछ पाओगी बेटी, सब कुछ पाओगी'। यह कैसे हो सकता है। क्या मेरी मनोकामना पूर्ण होगी?

१६

अत्यन्त अँधेरी रात है। चारो तरफ बादल छाये हुये हैं। गगा जी के किनारे सुरेश बाबू चिन्ता में मग्न बैठे हैं। सुरेश बाबू की भाव तन्मयता प्रकाश को पहुँच गई है। वह वहाँ खड़े होकर एक-एक गगा की बढी हुई जलराशि की ओर निहारने

लगे। जब से वह दीवानी पद पर नौकर हुए हैं। उन्हें एक घडी को चैन नहीं है। पिता जी का सर्वस्व नष्ट हो जाना और पिता जी की दुखमूर्ति उन्हे भुलाये नही भूलती। जब से उसने सुना है कि इस जमींदारी की मलकिन आई हैं। उसका नाम नीलिमा है। तब से उसे अपनी बीती बातें एक एक आ कर सताने लगी है। जब चारो तरफ से चिन्ता आकर घेर लेती है तो वह कभी गगा किनारे आकर घन्टो बैठे रहते हैं। आज भी वह अपना दुख भुलाने के लिए गगा की लहरो की उछल कूद देख रहे हैं। गंगा की लहरो को देख सुरेश बाबू ऐसे लीन हो गये कि उन्हे कुछ खबर ही नही रही। जब उन्होने ऊपर मुँह उठाया तो सामने एक विस्मय दृश्य देखा। उनके सारे शरीर मे रोमाच हो आया। प्रकाश मे सुरेश बाबू ने देखा सामने एक सन्यासिनी खडी है। उसकी लम्बी-लम्बी जटाये इधर-उधर बिखरी हुई हैं। गले में रुद्राक्ष की माला और शरीर पर गेरुआ वस्त्र है। सन्यासिनी ने कहा—बच्चा, क्या मर्द इसी तरह हाय हाय करते घूमते हैं ? छि छि।

सुरेश बाबू ने विस्मत होकर पूछा—माता आप कौन हैं ?

सन्यासिनी—मै चाहे कोई होऊँ, तुमसे एक बात कहे जाती हू। तुम जिसे चाहते हो, उससे दूर-दूर रह कर क्या उसे पा सकोगे ? सन्यासिनी चली जा रही थी, विस्मत होकर सुरेश बाबू ने पूछा—आप मेरे मन का हाल किस तरह जान गई। आप कौन हैं माँ ?

सन्यासिनी—यह सब पूछ कर क्या करोगे। तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। इतना कह सन्यासिनी फौरन वहाँ से चली गई! सुरेश बाबू यह अदभुत पहेली समझ न सके। वह केवल यही सोचने लगे, यह कौन है, कहाँ रहती है। मेरे मन की बात इन्हें कैसे मालूम हो गई?

१७

शान्ति ने नीलिमा से पूछा—आपने उस दिन कहा था कि फिर बताऊँगी। कृपा कर बताइये।

नीलिमा ने देर तक न मालूम क्या सोचा। अन्त में एक दीर्घस्वास लेकर कहा—जिस बात को मैंने किसी से न कहने का विचार किया था। तुम्हारी सेवा और प्रेम से सतुष्ट होकर आज तुमसे कहती हूँ। सुनो, बहुत दु ख की बात है।

शान्ति—दु ख की बात है तो क्या! आप कहिये।

नीलिमा—छत पर से जिस तरफ मै देख रही थी, जिसे देखते-देखते मेरी आँखो में आँसू आ गये थे। वही मेरा रामपुर गाँव है। उसी रामपुर मे मेरी जन्म-भूमि है। वही मेरी देह वर्द्धित हुई है। वहीं पर मैंने सुख-दु ख आदि का अनुभव किया है।

सुनकर शान्ति के प्राण मानो किसी भाव में परिणत हो गये। उसने कहा—आपका मकान क्या उसी गाँव में था। अब वहाँ कौन है?

नीलिमा—मेरा अब कोई नहीं है। घर भी रहा या नहीं, सन्देह है।

शान्ति—आपकी सुसराल किस गाँव मे है ?

नीलिमा को कहते बहुत कष्ट हुआ। किसे सुसराल बतावे ? फिर भी उसने अपने तन से, मन से, जिसे अपना इष्ट देव समझा है। वह उसकी सुसराल है। ससारिक व्योहार से विवाह नहीं हुआ तो क्या। मन से तो एक दूसरे को वर ही चुकें हैं।

उनने बडे कष्ट के साथ कहा—जिस मकान मे बैठी हूँ यही मेरी सुसराल है।

शान्ति—क्या ? यह तो किशोरी लाल का मकान है। यह तो जमीदार साहब ने आपके लिये खरीदा है।

नीलिमा—वे ही मेरे ससुर हैं।

शान्ति—कौन, किशोरी लाल ?

नीलिमा—हाँ।

शान्ति का एकदम सर्वाङ्ग कम्पित होने लगा। आनन्द, विषाद तथा अन्य भावो ने आकर उसे चिन्तित कर दिया। उसने कहा—किशोरी लाल के कौन से लडके आपके स्वामी हैं ?

नीलिमा—जो अब इस जमींदारी के दीवान हैं।

शान्ति बहुत प्रसन्न हुई। उसने हँसकर कहा—फिर दु ख किस बात का। यह तो घर की बात है। वे तो आपके आज्ञा-कारी नौकर हैं।

नीलिमा ने शान्ति का हाथ पकड़कर कहा—क्या कहती हो। इतनी उतावली न करो। स्थिर हो। पहिले शुरु से आखिर तक सुन लो। मैंने दु:ख की बात तो अभी एक भी नहीं कही है। बहुत बातें हैं! यदि इतना सहज होता तो मैं इतने दिन तक बाकी नहीं रखती। कभी का पूरा कर डालती।

शान्ति शान्त हुई। नीलिमा की इन बातों से उसकी हँसी अन्धकार में मिल गई। नीलिमा की तरफ देखकर बोली—और क्या बातें हैं?

नीलिमा—रामपुर में किशोरी लाल की जमींदारी थी। उनके पुत्र वहाँ जाया करते थे। दुर्भाग्य या सौभाग्य से हम दोनों का मिलाप हो गया। उस समय मुझे संसार का कुछ ज्ञान नहीं था। हम लोगों ने चन्द्र-सूर्य ग्रहण नक्षत्रों से साक्षी देकर दोनों हृदयों को एक किया। हम लोगों का लौकिक विवाह नहीं हुआ।

शान्ति यह सुनकर बोली—जब देवताओं को साक्षी देकर दोनों ने विवाह कर लिया तो ठीक है। अब लौकिक विवाह हो जाना चाहिए।

नीलिमा—यदि मेरे ससुर राजी न हों तो?

शान्ति—जब तो आप गरीब थीं। अब आपका अतुल ऐश्वर्य। दूसरी ओर वह इस समय खुद गिरी हालत में हैं।

नीलिमा—अगर स्वामी ग्रहण न करें?

शान्ति—किस दोष से?

सुरेश बाबू की तरफ देखा। सुरेश बाबू नीची निगाह किये बैठे थे, पर उन्हें एक बात याद आते ही सिर ऊपर उठाया। उन्होने सुना था विमल कुमार ने नीलिमा को गगा से निकाल कर धर्म कन्या मान उसे यहाँ का जमींदार बनाया है। उन्हें आशा बँधी थी कि किसी दिन देखने का मौका मिल गया तो सब समझ जाऊँग। आज निगाह उठाकर देखा तो सब आशाओ पर पानी पड गया। सुरेश बाबू ने निगाह उठाकर कई बार देखा पर जो उनकी आशा कुसुम नीलिमा थी वह यह नीलिमा नहीं है। तब उन्होने दीर्घश्वास लेकर मन में कहा, हाय, क्या मेरी आशा पूरी हो सकती है ?

शान्ति को कुछ कहते न देखकर चतुर दासी ने कहा—दीवान साहब को क्यो बुलाया है। वे चुप क्यो हैं ?

शान्ति—किससे बातें करूँ ?

दासी—दीवान साहब से।

शान्ति—पिता जी ने भूल से जमींदारी का काम ऐसे आदमी के हाथ में दिया है जिसे खुद अपना ही होश नहीं है। यह जब से आये हैं, बार-बार दीर्घश्वास छोड रहे हैं। उनसे उठ जाने को कहो।

दासी—यह क्यो। यह क्या कह रही हो ?

शान्ति—वे आये हैं कार्य का परामर्श करने। पर नीचे मुख किये ऐसे बैठे हैं जैसे चिन्ताओ की घटा उनके सिर पर मडला रही है।

सुरेश बाबू को कुछ होश नहीं था। वह तो नीलिमा की बात सोच रहे थे। शान्ति की आखिर बात उनके कानो मे पडी। उन्होंने खडे होकर कहा—माफ कीजिए। मैं अपने विचारो में लीन था।

शान्ति—आखिर आपकी चिन्ता का क्या कारण है।

सुरेश—माफ कीजिए, यह मेरी अपनी बात है। इसके सुनने से आपको कुछ लाभ नही होगा।

शान्ति—फिर भी आदमी का दुःख-सुख आदमी ही सुनता है।

सुरेश—(बहुत देर बाद एक लम्बी सास लेकर) मैंने सुना था कि बाबू विमल कुमार ने जिस लडकी को गगा में से निकाला है उसका नाम नीलिमा है। और मेरी स्त्री का भी यही नाम था। मैंने सोचा था कि आपको देखकर शायद पता चल जावे।

शान्ति—(ताज्जुब से) क्या तुम्हारा विवाह हो गया? और तुम्हारी स्त्री कहाँ है?

सुरेश बाबू अपने को धिक्कारने लगे। हाय, मैं क्या करने आया था और क्या कर डाला। फिर कहने लगे—माफ कीजिये, मैं अपनी दुःख कहानी किसी से कहना नहीं चाहता।

शान्ति—थोडी देर की बातचीत से मुझे आप से कुछ आतमीत्य हो गई है। अगर आपको कुछ दुःख न हो तो आप अपनी दुःख कहानी कह डालिये।

सुरेश—रामपुर ग्राम मे मेरी जमींदारी थी। वहाँ पर मैं लगान वसूल करने को जाया करता था। एक वार मै लगान वसूल करने गया तो वहाँ पर ऐसा आँधी-पानी आया कि मुझे नीलिमा के घर आश्रय लेना पडा। नीलिमा की माँ के मुख से उसकी दु ख कहानी सुनकर मुझे वहुत दु ख हुआ। मैंने उन्हें वचन दिया था कि मैं नीलिमा का भार अपने ऊपर लेता हू। नीलिमा की माँ से तो कह दिया पर जब पिताजी की तरफ ख्याल किया तो सोचा वह इस सम्बन्ध को कभी पसन्द न करेंगे। और न उसे अपने मकान में लाने देंगे। यही सोच कर मैंने पिता जी से कहना वेकार समझा और मैं देशो-विदेशो घूमता फिरा। श्रीमती जी ! मुझे माफ कीजिए। आज तक मैंने अपना हाल किसी से नही कहा। आप मेरी माता मलिकन हैं माता के वरावर हैं। मैंने आज तक परस्त्री को माता स्वरूप माना है।

शान्ति—आपका चरित्र मुझसे अविदत नही है। इन थोडे दिनों के भीतर ही मुझे सव मालूम हो गया है। यह सच है आप पराई स्त्री को मातृवत् समझते हैं। फिर, वेचारी उस वालिका ने आप का क्या विगाडा था, जो आपने उस पराई लड़की को लुभा कर छोड दिया।

सुरेश वावू—(गर्दन नीचे किये हुए) रामपुर की नीलिमा पराई स्त्री नहीं है। उससे मैंने विवाह किया था।

शान्ति—मैंने सुना है आपका विवाह नहीं हुआ ?

सुरेश बाबू—लौकिक विवाह तो नही हुआ लेकिन ग्रह-नक्षत्रो को साक्षी बनाकर मैंने उससे विवाह किया है।

शान्ति—अगर विवाह आप कर चुके थे तो उसे क्यों छोड दिया? आपने उसकी खोज खबर क्यो नहीं ली?

सुरेश बाबू—पिता जी के डर से बुला न सका। अगर बुलाता तो रहता कहाँ? अगर पिता जी को मालूम होता तो वह बहुत नाराज होते। इसी से बाध्य होकर मैं परदेश चला गया।

शान्ति—जब पिता जी का इतना ख्याल था तो उसके जीवन को तुमने क्यो बिगाडा। क्या किसी डर से अपनी धर्म-पत्नी को छोडा है?

सुरेश बाबू—मैंने छोडा नही है। पर मैंने देवतागणो को साक्षी देकर विवाह किया है। यह कोई नही मानेगा। जब मैंने सुना कि माँ की मृत्यु के बाद वह न जाने कहाँ चली गई। मैंने कितनी बार ढूँढा। कितनी जगह आदमी भेजे। लेकिन कहीं उसका पता नहीं चला।

शान्ति—शायद पेट की जलन से कही जाकर उसने अपना सतीत्व बेच दिया होगा।

इस बार सुरेश बाबू के नेत्रों में पानी भर आया। वह बोले—नहीं, मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी नीलिमा आत्म-विसर्जन कर सकती है पर सतीत्व नष्ट नहीं करेगी।

शान्ति—आपने यह बात कैसे जानी?

सुरेश बाबू—उसका मुझपर असीम प्रेम था।

शान्ति—जब आपने उस दुखिया की कोई खोज-खबर ही न ली, तो क्या परस्थितिओ मे पडकर वह ऐसा नही कर सकती।

सुरेश बाबू—नहीं-नहीं, वह ऐसा नही कर सकती। उसके ऊपर मेरा अटल विश्वास है। सच्चा प्रेम जीवन में एक बार होता है। वह दूसरे से प्रेम कभी नही कर सकती।

शान्ति—अब अगर पता मिले तो क्या करोगे?

सुरेश—स्त्री कहकर ग्रहण करूँगा।

शान्ति—आपके पिता अगर घर में लेना स्वीकार न करे?

सुरेश—मैं उसे लेकर स्वतन्त्र होकर रहूँगा।

शान्ति—और अगर समाज ग्रहण न करे तो?

सुरेश—समाज से ज्यादा मुझे वह प्रिय है।

शान्ति—आपकी दु ख भरी कहानी सुनकर मुझे बहुत दु ख हुआ। अगर आपकी इच्छा हो तो आदमियों को भेज कर उसे ढुँढवाया जाय, पर पहिले खूब सोच लीजिये कि आप उससे शादी करने को राजी हैं?

सुरेश बाबू—मैं भगवान की शपथ लेकर कहता हूँ कि आप उसे जरूर ढुँढवावें। मैं अवश्य उसे ग्रहण करूँगा। इसके लिए यदि पिता जी या समाज अथवा ससार तक का त्याग करना पडे। तो भी मुझे प्रसन्नता होगी।

शान्ति—कहीं बदल न जाना।

सुरेश बाबू—मैं मिथ्या बोलने में अत्यन्त सकोच करता हूँ।

शान्ति—अच्छा, मैंने जिस परामर्श के लिए आपको बुलाया था, वह सुनिये !

सुरेश बाबू—कहिये ?

शान्ति—मेरे पास बहुत धन है। अतुल ऐश्वर्य है। मैं दान-धर्म करूँगी, उसका प्रबन्ध करना पड़ेगा।

सुरेश बाबू—जिस समय आप कहेंगी, सब प्रबन्ध हो जावेगा।

शान्ति—मुझे अभी एक महान व्रत करना है। इसलिए सब ब्राह्मण पंडितों को निमन्त्रण देना है।

सुरेश बाबू—जो आज्ञा।

इसी समय एक दासी जो पहिले से सिखाई हुई थी, उसने आकर कहा—खाने का समय हो गया, आप आइये।

शान्ति ने सुरेश बाबू की तरफ देखकर कोमल कंठ से कहा—आप थोडी देर बैठिये। मैं अभी आती हूँ और भी बातें करनी हैं।

१८

सुरेश बाबू वहीं बैठे रहे। शान्ति उठकर वहाँ से चली गई। जाते समय ऐसा भाव दिखा गई, मानों उसका अनुग्रह सदा बना रहेगा।

जिस स्थान पर नीलिमा बैठी थी, वहाँ पहुँच कर शान्ति ने कहा—कार्य तो सिद्ध कर लिया।

नीलिमा के होठो में थोडी सी हँसी दिखाई दी। उसने कहा—क्या हुआ ?

शान्ति—सब ठीक हो गया।

नीलिमा—किस तरह ?

शान्ति—मैंने अपने छल कौशल से उनके मन की सारी बाते जान ली। वह तो नीलम रानी पर अब भी आशक्त हैं। यह कहकर धीरे से उससे एक चुटकी ले ली।

नीलिमा—हट मरी। तुझे तो छेड़खानी सूझी है। पर बता तो फिर उन्होंने क्या कहा ?

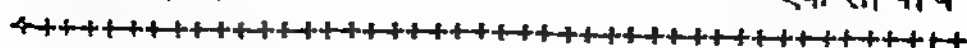
शान्ति—बताती हूँ मेरी रानी ! सुनो, अन्त में उन्होंने भगवान की शपथ खा कर कहा कि नीलिमा मेरी विवाहता स्त्री है। मैंन देवगणो की साक्षी देकर उससे शादी की है। अगर वह मिल जावे तो मैं उसे ग्रहण करूँगा। चाहे पिता और समाज भले ही छूट जावें।

नीलिमा ने ऐसे वाक्य सुने तो प्रेम मे गद्गद् हो गई। उसने आँखें मूँद कर सुरेश बाबू को मन ही मन प्रणाम किया। फिर कहा—मैंने यहाँ बैठे ही बैठे सारी बातें सुनी थी।

शान्ति—यहाँ बैठे बैठे क्यो बाते सुनी। कही मैं तेरे प्राणेश्वर के रूप पर मोहित न हो जाऊँ ! क्यो ?

नीलिमा—मर जा !

शान्ति—छि। यह क्या कहती हो ? मैं क्यो मरने लगी। अब तो मैं सुरेश बाबू को लेकर घर-बार करूँगी।



नीलिमा—दुष्ट अब तो सब कामो में टाग अडायेगी। यह कहकर खूब हँसी।

शान्ति ने हँस कर कहा—तो फिर जाओ, जो कुछ करना है खुद जाकर करो।

नीलिमा—अरे! मै कहाँ जाऊँगी। जाकर क्या करूँगी?

तब शान्ति ने धीरे-धीरे उठकर नीलिमा के कानों मे बहुत सी बाते कही। फिर हँस पडी। उसने कहा—नही कर सकोगी।

नीलिमा—कोशिश करके देखूँगी।

शान्ति—फिर साज सजा दूँ। दासी बुलाऊँ?

नीलिमा—नही, यह नही हो सकेगा।

शान्ति—प्रकृति का दिया हुआ तुम्हारे पास जो साज है। लोग उसे ही देखकर पागल हो जाते हैं।

नीलिमा—वह क्या है?

शान्ति—वह तुम्हारा रूप है।

नीलिमा— लजा कर) चल हट दूर हो!

नीलिमा उठी और उसी कमरे की तरफ चल दी जहाँ सुरेश बाबू बैठे हुये थे। दरवाजे के पास खडी बहुत देर तक सोचती रही। उसके प्राणों के भीतर एक प्रकार की उथल पुथल मच रही थी। बहुत देर वहीं खडी रह कर हृदय में बल का सचार किया। फिर उस गृह मे प्रवेश किया। शान्ति के बाहर जाने के बाद जहाँ पर सुरेश बाबू और दो दासिया बैठी थीं। नीलिमा को घर के भीतर प्रवेश करते ही दोनो दासिया उठकर

खड़ी हो गई । नीलिमा जाकर कुर्सी पर बैठ गई। दासियों से कहा—तुम एक तो पखा करो और जाकर पान लाओ।

दासी दौड़कर पान लेने चली गई। तुरन्त ही एक तश्तरी में पान लेकर आई। दोनो दासियां पखा करने लगीं।

१६

सुरेश बाबू नीचे गर्दन किये बैठे थे। उन्होने मुँह उठाकर नही देखा पर भ्रम मे पड गये। पहिले जो बैठी थीं उनकी सेवा दासिया नही कर रही थीं। अब दौडकर दासिया सेवा में लग गई। और जो भोजन करने गई हैं, जिन्हे वह खुद मलकिन समझे बैठे थे। उनकी आवाज दूसरी तरह की थी।

नीलिमा ने जो सामने सुरेश बाबू को देखा तो उसका मन एकदम पागल हो उठा। बार-बार उसके दिल में यह बात आने लगी कि एकदम अपने प्यारे के चरणो मे लोट जाऊँ। पर मजबूर होकर मन को रोके रही। शान्ति की सिखाई हुई बाते नीलिमा ने कहने की कोशिश की पर गला भर आया। आखिर बडी मुश्किल से कहना आरभ किया तो भी गला भरा हुआ था। ऐसा लगता था मानो वर्षा की कोयल कूक रही थी।

मेरे पास ऐश्वर्य और अपरिमित धन है। मुझे मेरी धर्म माता ने राजरानी बना दिया है। अब मै धर्म कर्म व्रतादि करूँगी। आपको इसमे मेरी मदद करनी पडेगी।

नीचा सिर किये हुये सुरेश बाबू ने कहा—मुझे आप जो हुक्म करेंगी वह करने को मैं तैयार हूँ।

पास के कमरे में यह कहकर हँसने की आवाज आई—"आप जो हुक्म करेंगी वह मानने को तैयार हूँ"।

नीलिमा अपने को रोक न सकी। उसने कहा—आप मेरे नौकर नहीं है। जो आप पर हुक्म चलाऊँ। आप मेरे स्वामी हैं, मैं आपकी दासी हूँ।

अब सुरेश बाबू ठहर नही सके। उन्होंने बहुत दिनो बाद वह चिर परिचित शब्द सुने। वे विस्फुरत नेत्रो से नीलिमा की तरफ देखने लगे। नीलिमा की निगाह भी सुरेश बाबू की तरफ थी। दोनो की आँखें चार होते ही प्रेम-नदी में बाढ आ गई। सुरेश बाबू के देखते ही सारा शरीर काँप उठा। वे दौड कर—हा, मेरी रानी! नीलिमा रानी, मुझे माफ करो। कहकर नीलिमा के पैरो पर गिर पडे। दोनों ही निर्वाक निशब्द थे। कोई कुछ भी नहीं कह सका। दोनो ने रो कर अपना हृदय बहा दिया। कौन कह सकता है यह सुख का क्रन्दन है या दुःख का? लोग कहते हैं, दुःख होने से आँखों से आँसू निकलते हैं, लेकिन आज इन दोनो को किस बात का दुःख है। यह तो परम सुख है, जिसे यह दोनों ने इतने दुःख और कष्ट भोगने पर पाये हैं। थोडी देर बाद नीलिमा को होश हुआ। उसने सुरेश बाबू को उठाकर कहा—हैं, आप यह क्या कर रहे हैं। आप मेरे बड़े और पूज्य हैं। आपके चरणों में मुझे प्रणाम

करना चाहिए था। यह कहकर उसने झुक कर सुरेश बाबू के पैर छू लिये।

सुरेश बाबू ने नीलिमा को उठाकर छाती से लगा लिया। दोनो ही बहुत देर तक एक दूसरे के बाहुपाश मे आबद्ध रहे। दासिया दोनो पहिले ही चली गई थीं। नीलिमा ने सुरेश बाबू के हृदय मे मुँह छिपा कर जो सुख प्राप्त किया, वह पाठक खुद समझ सकते हैं। हम तो नहीं समझे।

२०

नेत्रों से पानी दुःख मे नही बहता, सुख मे भी नहीं। पूर्ण होने से हृदय भाव उछल कर नेत्रो से प्रवाहित होने लगता है।

इसी समय शान्ति आ गई। वह कृतिम-क्रोध दिखाकर बोली—दीवान साहब यह क्या है?

सुरेश बाबू ने सिर उठाकर देखा। जिनको उन्होंने मालिकन जाना था वह आ गई।

सुरेश बाबू ने जल्दी से सचेत होकर कहा—देवी जी मुझे माफ कीजिए। बहुत दिन के बाद आज अपनी मनो-कामना पूरी होते देखकर आत्म विस्मृत हो गया था।

लाल नेत्र कर शान्ति ने कहा—आप ने जो कार्य किया है, उसके लिए दूसरा कोई होता तो विशेष दण्ड पाता। पर मैं आपको थोडा दण्ड देती हूँ। आज से आप नौकरी से अलग किये गये। मैंने आपको जवाब दिया।

सुरेश बाबू का चेहरा एकदम उतर गया। मुख सूख गया। हाय, नौकरी की तो आशा थी। पिता जी सुनेंगे तो क्या कहेंगे। हाय, मैंने क्या कर डाला ?

नीलिमा ने देखा उसके स्वामी चिन्ता में लीन हैं। उस पर उनका सुस्त चेहरा देखा नहीं गया। उसने उनके दुःख दूर करने के लिये कहा—"मेरे सिर में बहुत जोर से दर्द हो रहा है"।

नीलिमा का सिर दर्द कर रहा है, यह जान कर शान्ति सब हँसी-मजाक छोड़कर गुलाब जल की बोतल दौड़कर ले आई और नीलिमा का सिर तर करने लगी। तीन चार दासियां हवा करने लगी।

शान्ति—अब कैसी तबियत है ?

नीलिमा—(अपने भाव से) हाँ। दर्द कुछ कम है। माथा भारी सा है। तुम जरा दबा दो।

शान्ति नीलिमा का मस्तक दबाने लगी। सुरेश बाबू यह सब देखकर बहुत सोच में पड़ गये। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। अन्त में सुरेश बाबू की कुछ कुछ समझ में आने लगा कि नीलिमा मेरी रानी ही इस जमींदारी की अधिकारिणी है। नहीं तो उसकी जरा सी बीमारी हो जाने ही क्यों सब इतने व्यस्त हो जाते और जिसको मैं मलकिन सोचे बैठा था अगर वह मलकिन होती तो नीलिमा की कुछ सेवा क्यों करती।

शान्ति ने सुरेश बाबू की तरफ देखकर मृदु कण्ठ से कहा—कृपा कर आप यहाँ पर बैठिये। मैं थोड़ी देर में आती हूँ। चतुर शान्ति सुरेश बाबू को नीलिमा के पास छोड़कर आप चली गई।

सुरेश बाबू नीलिमा के पास पहुँच कर प्रेम से उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और पूछा—रानी, कैसी तबियत है ?

नीलिमा—अब तो ठीक है।

सुरेश बाबू ने नीलिमा के गुलाबी गालों पर एक प्रेम चिह्न अङ्कित कर दिया। नीलिमा शर्मा कर उठ बैठी और कहा—चलो हटो! अगर मलकिन आ गई तो अभी तो नौकरी से अलग किया और अब ... . .।

सुरेश बाबू—हाँ, अब क्या होगा ?

नीलिमा—अब कुछ दूसरा इलजाम लगाया जायगा।

सुरेश बाबू—कुछ परवाह नहीं है। अब मेरे ऊपर कितने कष्ट पड़ें, मैं सब सहने को तैयार हूँ। यह, कहकर सुरेश बाबू ने नीलिमा को खींच कर छाती से लगा लिया। नीलिमा भी सुरेश बाबू की गोद में सुखानुभव करने लगी।

सुरेश बाबू ने नीलिमा से कहा—हृदयेश्वरी, यदि कहने में किसी प्रकार का कष्ट न हो तो मुझसे सब बातें कहो कि तुम घर से बाहर जाकर कहाँ पर और किस अवस्था में रही। और क्यों जीवन देने गई थीं ? मुझे सुनने की बड़ी इच्छा

हो रही है।

नीलिमा ने अपनी दु ख कहानी आदि से लेकर अन्त तक सब ठीक-ठीक सुना दी। यह सुनकर सुरेश बाबू भी रोने लगे। थोडी देर बाद शान्ति ने दोनों के वास्ते दासी के हाथों भोजन भेज दिया। नीलिमा ने अपने हाथों से सुरेश बाबू को प्रेम से भोजन कराया। आज नीलिमा के सुख की सीमा नही है। जिसके लिये उसने बडे-बडे कष्ट सहे हैं। वही आज उसके सामने है। बहुत दिनो बाद स्वामी के साथ नीलिमा की भेंट हुई है। अहा! नीलिमा के भाग्य में आज का दिन कैसी प्रसन्नता का है। आज उसके हृदय में आनन्द नही समाता।

२१

दूसरे दिन शान्ति ने नीलिमा से कहा—सुरेश बाबू तो तैयार हैं। अब इस काम मे देर नही करनी चाहिए। आपका विवाह तो हो ही चुका है, फिर भी लौकिक विवाह होना जरूरी है। आप अपने धर्म माता पिता को यह खुशखबरी भेज दीजिये। और दीवान साहब को भी अपने पिता से बात कर लेनी चाहिये।

शान्ति ने एक दासी के हाथों एक परचा लिख कर सुरेश बाबू के पास भेज दिया। सुरेश बाबू अपने मकान ही पर थे। उन्होंने एक दासी द्वारा सब बाते अपने पिता जी के पास

कहलवाई । सुरेश बाबू के पिता यह बातें सुनकर थोडी देर चुप रहे । फिर नीलिमा का अतुल ऐश्वर्य देखकर राजी हो गये । उन्होंने सुरेश बाबू को बुलाकर कहा—मै राजी हूँ ।

दोपहर होते-होते यह बात चारो तरफ फैल गई। सुरेश बाबू की माँ यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई । घर-घर इस आनन्द समाचार से बडी धूम मच गई। लोगो की बैठक मे, दूकानदार की दूकानो में, मदिरो में, और लडकियो की पाठशालाओ में जहाँ देखो वही नीलिमा की चर्चा होने लगी। कोई कहता सुरेश बाबू का भाग्य अच्छा है । तो कोई कहता है पुण्य कर्मो का फल है । जो ऐसी रूपवती, गुणवती और धनवती लक्ष्मी सी स्त्री उसको मिली ! कोई कहता किशोरी लाल की जमींदारी गई तो क्या हुआ। अब तो उससे ज्यादा उन्हें मिलेगी। इसी तरह चारो तरफ किशोरी लाल, सुरेश बाबू नीलिमा और जमींदारी की बातो की घर-घर चर्चा हो रही है ।

२२

दिन ढलने का समय आया। सूर्य भगवान अस्थाचल को प्रवेश करने लगे। मृदमन्द समीर प्रवाहित होना प्रारम्भ हुआ। विविध वृक्षों पर नाना प्रकार के पक्षी मधुर गान करने लगे। इसी समय सुरेश बाबू ने राज भवन में प्रवेश किया। आज सुरेश बाबू का वह भाव नहीं है। उन्होंने भीतर जाकर दासी

से पूछा—नीलिमा कहाँ हैं ?

दासी ने कहा—रानी साहब ऊपर हैं।

सुरेश बाबू ऊपर गये। वहाँ नीलिमा और शान्ति दोनों बैठी हुई थीं।

सुरेश बाबू को आते देखकर शान्ति ने हँसकर कहा—मैं अब जाऊँ।

नीलिमा—कहाँ ?

शान्ति—जहाँ इच्छा होगी। यहाँ किस तरह से रहूँ ?

नीलिमा—क्यों ? यहाँ पर तुम्हे क्या कोई डर है ?

शान्ति—देखती नहीं, कौन आ रहा है।

नीलिमा—आने दो। वह कोई शेर तो नहीं हैं कि तुम्हे खा जायँगे।

शान्ति—स्त्रियों के लिए तो सिंह ही हैं। देखो कैसा सुन्दर मुखारविन्द है।

नीलिमा—(हँसकर) तो तू जा मर जा। अगर तू इनकी सुन्दरता पर मोहित है तो इनके साथ शादी क्यों नहीं कर लेती ?

शान्ति—फिर नीलिमा रानी कहाँ जायँगी ?

नीलिमा—भाड़ में !

शान्ति—भाड़ में रहते तो बहुत दिन हो गये। अब तो . . . ।

इतने में सुरेश बाबू पास आ गये। उन्होंने कहा—मैं तु लोगों के लिए एक सुसमाचार लाया हूँ।

शान्ति—(हँसकर) आप नौकर हैं, नीलिमा रानी मलकि हैं, सुसमाचार देने पर पारितोषिक पावेंगे।

नीलिमा ने हँसकर कहा—तुम बड़ी दुष्ट हो।

नीलिमा ने फिर हँसकर सुरेश बाबू से कहा—कहो क्य सुसमाचार है?

शान्ति ने फिर बनावटी हँसी से हँसते हुये कहा—कहि दीवान साहब, आप हमारी मलकिन के लिए क्या सुसमाचा लाये हैं?

सुरेश बाबू ने हँसते हुये कहा—मैंने पिता जी से सा बा कह्ला दी। माँ ने भी सब सुन लिया है।

नीलिमा—सुनकर क्या कहा?

सुरेश बाबू—वह दोनों राजी हैं। कहते हैं समाज से अलग होना पड़े तो कोई चिन्ता नहीं है। बहू को अवश्य घर लाऊँगा

शान्ति और नीलिमा दोनों यह सुनकर बहुत खुशी हुई सुरेश बाबू थोड़ी देर बाद बातें करके अपने घर चले गये शान्ति ने नीलिमा से कहा—अब देर नहीं करनी चाहिए अब जल्दी ही अपने माता-पिता को खबर कर दीजिए। बहुत कष्टों के बाद यह दिन देखने को मिला है। शुभ-कार्य में देर करना ठीक नहीं है।

२३

दूसरे दिन नौकर द्वारा नीलिमा के धर्म माता पिता को इस सुसमाचार की खबर भेज दी गई। जब उन दोनों को यह सारा हाल मालूम हुआ तो बड़ी खुशी हुई। उन्होंने नीलिमा की शादी की तैयारी करनी शुरु कर दी। तरह-तरह की खुशी चारों तरफ मनाई जाने लगी। बाबू विमल कुमार और सावित्री देवी के प्रबन्ध से नीलिमा और सुरेश बाबू का ब्याह निर्विघ्न समाप्त हो गया। बाबू विमल कुमार ने जो जमींदारी और मकान नीलिमा के वास्ते खरीदा था वह सब उसे कन्यादान में दे दिया और बहुत सा नकद रुपया जेवर इत्यादि दिये। किशोरी लाल अपना मकान, जमीन, जायदाद पाकर फूले न समाते। उनका वैभव पहिले से भी अब दूना हो गया।

विवाह की समस्त रीति पूर्ण हो जाने पर एक दिन नीलिमा ने सुरेश बाबू से कहा—रामपुर की बीसू की माँ कैसी है?

सुरेश बाबू—मुझे पता नहीं है।

नीलिमा—उसने मेरे साथ बड़ा उपकार किया है। कृपा कर के उसे बुला दो।

सुरेश बाबू—आदमी भेजकर बुलवा देता हूँ।

शान्ति—सन्ध्या समय बधू दर्शन और आमोद प्रमोद होगा।

चारों तरफ से खुशी ही खुशी नजर आने लगी। आज

सुरेश की माँ की खुशी का ठिकाना नही। वह बेचारी तो यही समझे बैठी थी कि अब मेरा सुरेश शादी नही करेगा। वह तो बहू का मुख देखने को तरस रही थी। एकाएक वह इतनी सुन्दर बहू और सद्‌गुण धन देखकर फूले नही समाई।

घीसू की माँ आ गई। इधर सध्या हो गई। चारो तरफ अँधकार छा गया। लेकिन फिर उसी अँधकार को नष्ट कर गगन-मण्डल मे तारों का राज्य स्थापित हो गया। उनके हँसने से जगत् सुख की हँसी हँसा। प्रकृति आलोक-माला से विभूषित हो गई।

सुरेश बाबू कचहरी में बैठे थे। इसी समय नौकर ने आकर कहा—घीसू की माँ हाजिर है।'

घीसू की माँ डर से हाथ जोड कर बोली—मुझे क्यों बुलाया है सरकार ? मैं बहुत दु खी हूँ।

सुरेश बाबू—तुम्हे मैंने नही बुलाया है।

बुढ़िया—तो फिर किसने बुलाया है ?

सुरेश बाबू—भीतर से किसी ने बुलाया है।

बुढ़िया भयभीत हो गई। सुरेश बाबू ने एक दासी को भेज कर बुढिया को नीलिमा के पास जाने की आज्ञा दी। बुढिया ने दासी के साथ भीतर प्रवेश किया। नीलिमा ने बुढिया का आया जान कर एक क्षण का विलम्ब नहीं किया। वह दौडकर बुढिया के पास आई। बुढिया के पास आकर गद्‌गद् कण्ठ से बोली—माँ, मुझको पहिचानती हो ?

बुढिया नीलिमा की तरफ देखकर रो पड़ी। कहा—हाँ, पहिचाना। बेटी, तू जिन्दा है? तू मुझे धोखा देकर कहाँ चली गई थी। तू इस मकान मे क्यो है?

नीलिमा के प्रति बुढिया ने कई बार तू शब्द का प्रयोग किया जो असम्मानीय वाक्य था। इस पर एक दासी ने कहा—अरी मर जा असभ्य! मलकिन से इस तरह बातचीत करती है। बुढिया डर के मारे सुकड़ गई। उसने कहा—कौन? मलकिन कौन है? और वह भौंचक्की सी चारो ओर देखने लगी।

दासी—आँखें नही हैं। जिनके साथ बातचीत कर रही है, वही तो मलकिन हैं।

बुढिया—क्या तुम मेरी वही नीलिमा हो या कोई मलकिन?

नीलिमा को पुरानी बाते याद आ गई। उसकी आँखो मे पानी भर आया। उसने आँचल से आँसू पोछ कर कहा—मैं तुम्हारी वही नीलू हूँ।

बुढिया—(ताज्जुब से) क्या तुम इस राज्य की रानी हो?

नीलिमा—दूसरों के लिये हूँ पर तुम्हारे लिए वही नील बेटी हूँ।

तब शान्ति ने बुढिया से नीलिमा का सारा हाल कहा। नीलिमा की दुःख भरी कथा सुनकर बुढिया खूब रोई। फिर किस तरह राजरानी हुई, यह जान बुढिया आनन्द से विह्वल हो गई। नीलिमा ने बुढिया को अपने पास ही रक्खा।